सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 141, नई दिल्ली, बुधवार 30 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 त्याग, समर्पण और वीरता के मूल्यों से ही 'अखण्ड भारत' का होगा निर्माण

06 हमारे सौर मंडल से परे जीवन की आशा की किरण

08 भुवनेश्वर हवाई अड्डे पर 30 करोड़ रुपये का मारिजुआना बरामद, 3 गिरफ्तार

क्या भारत शहर में परिवहन क्षेत्र मे उपलब्ध विशेषज्ञ यह बता सकते हैं की दिल्ली की सड़को पर इतने जाम का कारण क्या है और कौन है इसका मुख्य रूप से जिम्मेदार ?

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। दिल्ली में रहने वाले सभी सड़को पर अधिकतर जाम से जूझते हुए अपने कार्य स्थल और घरों में पहुंचते हैं यह सारी दुनिया जानती हैं। माननीय सुप्रीम कोर्ट, उच्च न्यायालय, परिवहन विभाग, यातायात पुलिस भी लगातार नए नए नियमों को बनाती नजर आती हैं पर जाम के निवारण की जगह जाम बढ़ता ही जा रहा है, आख़िर कहीं ना कही कुछ तो त्रुटि है जिस कारण से इसका हल नहीं निकल रहा।

देश में परिवहन जगत के अनगिनत विशेषज्ञ भी अपने तजुर्बों के आधार पर नित नए नए लेख और वकतव्य प्रस्तुति करते नजर आते हैं पर जाम की समस्या टस से मस नहीं हो रही।

आपको इतना भी अंदाजा अवश्य होगा की दिल्ली वासी जान के कारण अपना कीमती समय तो खो ही रहे हैं और साथ में उनके खून पसीने से कमाया हुआ धन भी इसके कारण बर्बाद हो रहा हैं। दिल्ली के वाहनो में सफर में उतना पैट्रोल, डीजल, गैस खर्च नही होता जितना जाम में होता हैं यानी समय और धन दोनों की बर्बादी।

इतना सब होते, देखते और जानते हुए भी इसका कोई स्थाई हल क्यों नहीं क्या परिवहन जगत के विशेषज्ञ, सड़क परिवहन एवम्राजमार्ग मंत्रालय, दिल्ली के उपराज्यपाल, दिल्ली के मुख्य सचिव, दिल्ली सरकार, दिल्ली परिवहन विभाग और दिल्ली यातायात पुलिस के आला अधिकारी जनता को बता सकते हैं ?

क्या बता सकते हैं दिल्ली में ऐसी कौन सी वाहनों की श्रेणियां हैं जो जाम को लगवाने में सबसे ज्यादा रोल निभा रही हैं ?

आपकी जानकारी हेतु बता दे दिल्ली पुलिस में ज्वाइंट कमिश्नर पद पर कार्यरत अधिकारी रजनीश गुप्ता जब एसीपी यातायात थे उस समय में आजाद मार्केट चौक का जाम विश्व विख्यात था और उसका निवारण नहीं हो पा रहा था तब इन्हीं अधिकारी की सूझ बूझ और सही दिशा में किए गए कार्य ने उस चौक को जाम मुक्त कर दिखाया था। अब सवाल यह उठता हैं की क्या अन्य अधिकारी अपनी सूझ बूझ और सही दिशा में कार्य कर अपने क्षेत्र में लगने वाले जाम को दूर नही करवा सकते ?

हम दावे से बोल सकते हैं को दिल्ली की सड़को पर लगने वाले जाम के कुछ ही मुख्य कारण हैं पर उनका निवारण करवाने वाले निवारण करना ही नहीं चाहते, आखिर क्यों, यह एक बहुत सोचनीय मुद्दा है।

उचित कार्रवाई के बिना कोई समझौता नहीं

दो दिनों का समय प्रशासन ने माँगा - धरने पर बैठे लोगों से

परिवहन विशेष न्यूज

राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा - ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी- उफ्तत्सा की टीम पात्रा पटियाला पहुंची व धरने में शामिल होकर प्रशासन के साथ बातचीत के माहौल में अपनी मांगे रखी और दुख जताया कि पांच दिन बीत जाने के बाद भी अभी तक प्रशासन की तरफ से कोई दृस्टिगोचर कार्रवाई नहीं हो पाई है यह बड़े ही दुख की बात है और प्रशासन से ऐसी व्यवहार की उम्मीद नहीं की जा सकती1 अपने प्राथमिकताओं के रूप में इस कृत्य में सम्मिलित दोषियों को उचित कार्रवाई के तहत कड़ी से कड़ी सजाओं का प्रावधान हो,दिवंगत आत्माओं के परिवारों में से एक को सरकारी नौकरी का नियुक्ति पत्र, प्रति परिवार एक-एक करोड रुपए की क्षतिपूर्ति राशि की घोषणा हो1 इसके प्रत्युत्तर में स्थानीय प्रशासन ने दो-दो लाख रुपए स्वीकृति किए जाने की बात कही, जिस पर घोर आपत्ति जताते हुए राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा की टीम के श्री रविंद्र बधानी जी ने विरोध दर्ज कराया व कहा कि

हम अपनी मांगों से पीछे नहीं हटेंगे दो दिन का समय प्रशासन को देते हुए राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा की तरफ से नरेश गोछी ने कहा कि पूरे राष्ट्र में आंदोलन को हम जगाने का कार्य करेंगे क्योंकि यह सारथी समाज के मान,सम्मान व स्वाभिमान की लड़ाई है जिसमें हम कतई पीछे नहीं हटेंगे1 विभिन्न अधिकारियों से फोन पर संपर्क करने के विफल प्रयास के पश्चात राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा की टीम ने इसे राष्ट्रीय मुद्दा बनाने की बात कही1 धरने स्थल पर शामिल होने वाले प्रतिनिधि मंडल में ऑल पंजाबी ट्रक एकता के अजय सिंगला, राज सिंधु, पात्रा ट्रक यूनियन के प्रधान श्री रणजीत सिंह विर्क व राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा के चालक (सारथी) इकाई के नरेंद्र बुवाना, सतीश धनखड़, ईश्वर सिँह, अशोक कुमार वअन्य शामिल हुए1 राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार यादव ने इस प्रकरण में अंत तक डटे रहने का भरोसा दिलाते हुए कहा की बिना उचित समाधान व क्षतिपूर्ति राशि प्रदान किये धरना हटने पर राष्ट्र के समस्त राज्यों में पुरे ताकत से उठाने की बात कही ।

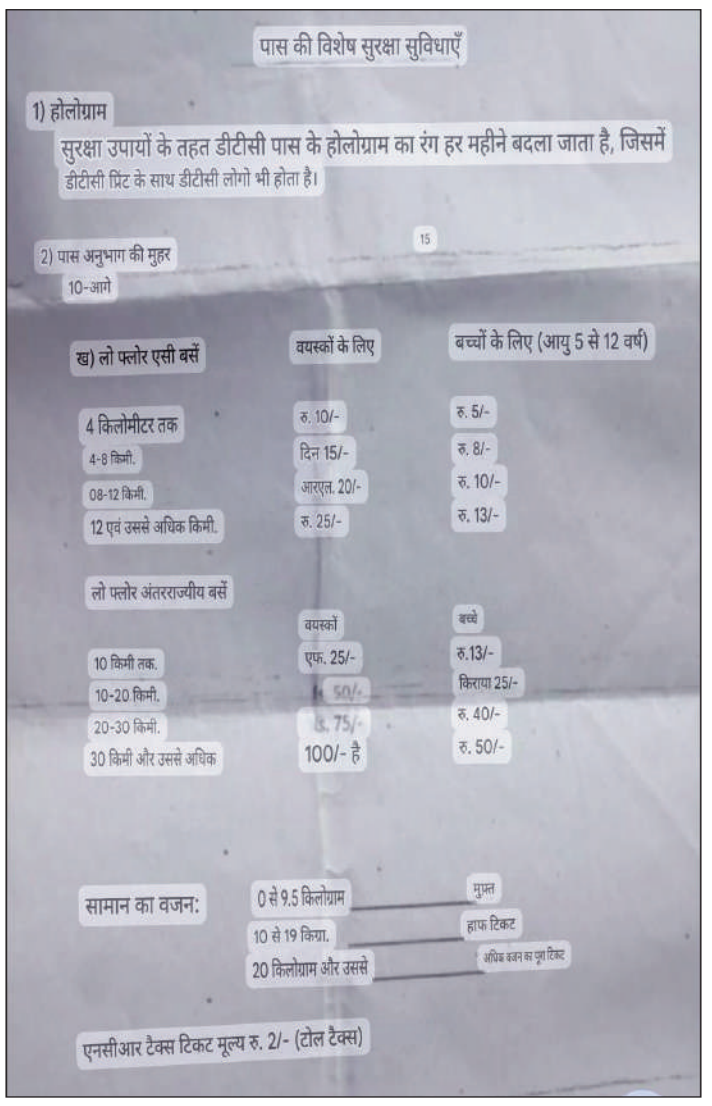

दिल्ली का ये रेलवे स्टेशन हो गया चकाचक, यात्रियों को अब मिलेंगी बेहतर सुविधा

दिल्ली सराय रोहिल्ला रेलवे स्टेशन का आधुनिकीकरण किया गया है जिसमें लगभग 25 करोड़ रुपये की लागत आई है। उत्तर रेलवे ने आठ दिनों में यह काम पूरा किया। स्टेशन पर नई लूप लाइनें जोड़ी गई हैं और डिजिटल इंटरलाकिंग सिस्टम लगाया गया है। इससे सुरक्षा और संचालन बेहतर होगा जिससे 30200 से अधिक यात्रियों को सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा का अनुभव होगा।

नई दिल्ली। दिल्ली के व्यस्त और प्रमुख स्टेशनों में शामिल दिल्ली सराय रोहिल्ला रेलवे स्टेशन अब पूरी तरह से नए और उन्नत रूप में यात्रियों का स्वागत कर रहा है। उत्तर रेलवे ने इस स्टेशन के आधुनिकीकरण का काम आठ दिनों में लगभग लगभग 25 करोड़ रुपये की लागत से पूरा किया है।

इस स्टेशन से हर दिन लगभग 104 ट्रेनें गुजरती हैं। जिनमें जयपुर डबल डेकर, जम्मू दुरंतो, यशवंतपुर दुरंतो, चेतक एक्सप्रेस, अजमेर जनशताब्दी जैसी महत्वपूर्ण ट्रेनें शामिल हैं। यहां से रोजाना 30,200 से अधिक यात्री रोजाना यात्रा करते हैं।

रेलवे अधिकारियों के अनुसार उत्तर रेलवे ने स्टेशन की यार्ड रीमाडलिंग यानी रेल पटरियों की फिर से योजना बनाकर उसे ज्यादा कार्यक्षम बनाया है। इसके अलावा स्टेशन पर एक नई लूप लाइन और दो अतिरिक्त स्टेबलिंग लाइनें जोड़ी गई हैं। इससे न केवल ट्रेनों की संख्या बढ़ाई जा सकेगी बल्कि शंटिंग आपरेशन यानी ट्रेनों को इधर-उधर ले जाने की प्रक्रिया भी आसान होगी।

पुरानी इंटरलाकिंग प्रणाली को हटाकर अब डिजिटल इलेक्ट्रानिक इंटरलाकिंग सिस्टम लगाया गया है। जिससे सुरक्षा और संचालन दोनों बेहतर होंगे। यहां पर चार टर्नआउट और नौ ट्रैप इंस्टाल किए गए हैं।

जिससे ट्रेनों का मार्ग परिवर्तित करने में सुविधा होगी। सराय रोहिल्ला रेलवे स्टेशन का कायाकल्प होने के बाद से यात्रियों को अधिक सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा का अनुभव होगा।

महाकाल को प्रसन्न करने वाला है महाकाल स्त्रोत

पंडित योगेश पौराणिक (ज्योतिषाचार्य)

भगवान महाकाल स्वयं भैरवी को महाकाल स्त्रोत का वर्णन करते हुए कहते हैं कि शिव भक्तों के लिए यह स्त्रोत वरदान स्वरूप है। जो भक्त नित्य महाकाल स्त्रोत का पाठ करता है उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती है तथा किसी भी प्रकार के असाध्य रोगों से भी व्यक्ति को मुक्ति प्राप्त होती है। भगवान महाकाल स्वयं काल के भी काल है। काल का अर्थ होता है समय भगवान महाकाल के इस स्त्रोत के पाठ से भक्तों का यदि बुरा समय भी चल रहा हो तो वह अच्छे समय में परिवर्तित हो जाता है। जन्म कुंडली में यदि राहु अथवा शनि की महादशा हो तो इस स्त्रोत का नित्य पाठ करना चाहिए। इससे ग्रहों के बुरे प्रभाव में कमी आती है। महाकाल स्त्रोत कुछ इस प्रकार से है।

ॐ महाकाल महाकाय महाकाल जगत्पते महाकाल महायोगिन महाकाल नमोस्तुते महाकाल महादेव महाकाल महा प्रभो महाकाल महारुद्र महाकाल नमोस्तुते महाकाल महाज्ञान महाकाल तमोपहन महाकाल महाकाल महाकाल नमोस्तुते भवाय च नमस्तुभ्यं शर्वाय च नमो नमः रुद्राय च नमस्तुभ्यं पशुना पतये नमः उग्राय च नमस्तुभ्यं महादेवाय वै नमः भीमाय च नमस्तुभ्यं मिशानाया नमो नमः ईश्वराय नमस्तुभ्यं तत्पुरुषाय वै नमः सघोजात नमस्तुभ्यं शुक्ल वर्ण नमो नमः अधः काल अग्नि रुद्राय रुद्र रूप आय वै नमः स्थितुपति लयानाम च हेतु रुपआय वै नमः परमेश्वर रूप स्तवं नील कंठ नमोस्तुते पवनाय नमतुभ्यम हुताशन नमोस्तुते सोम रूप नमस्तुभ्यं सूर्य रूप नमोस्तुते यजमान नमस्तुभ्यं अकाशाया नमो नमः सर्व रूप नमस्तुभ्यं विश्व रूप नमोस्तुते ब्रहम रूप नमस्तुभ्यं विष्णु रुप नमोस्तुते रुद्र रूप नमस्तुभ्यं महाकाल नमोस्तुते स्थावराय नमस्तुभ्यं जंघमाय नमो नमः नमः उभय रुपा भ्याम शाश्वताय नमो नमः हुं हुंकार नमस्तुभ्यं निष्कलाय नमो नमः सचिदानंद रुपआय महाकालाय ते नमः प्रसीद में नमो नित्यं मेघ वर्ण नमोस्तुते प्रसीद में महेशान दिग्वासाया नमो नमः ॐ ह्रीं माया - स्वरूपाय सच्चिदानंद तेजसे स्वः सम्पूर्ण मन्त्राय सोऽहं हंसाय ते नमः

फल श्रुति

इत्येवं देव देवस्य मह्कालासय भैरवी कीर्तितम पूजनं सम्यक सधाकानाम सुखावहम ।। इति महाकाल स्तोत्र सम्पूर्णम् ।।

नाग पंचमी पर्व पर भगवान श्री नागचंद्रेश्वर के दर्शन के लिए मध्य रात्रि में पट खुले

महंत श्री विनितगिरी महाराज ने विधि विधान से किया भगवान नागचंद्रेश्वर का पूजन

उज्जैन। साल में एक बार नाग पंचमी के अवसर पर खुलने वाले भगवान श्री नागचंद्रेश्वर के पट रात्रि 12 बजे शुभ मुहूर्त में खोले गए। पूजन अर्चन के बाद भगवान नागचंद्रेश्वर के दर्शन आम दर्शनार्थियों के लिए खोल दिए गए।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश: आदि-अंत रहित ज्योतिर्लिंग की कथा

प्राचीन काल की बात है, जब सृष्टि का आरंभ हो रहा था या हो चुका था। उस समय, सृष्टि के प्रमुख देवों, भगवान ब्रह्मा (सृष्टि के रचयिता) और भगवान विष्णु (सृष्टि के पालक/संरक्षक) के बीच अपनी-अपनी श्रेष्ठता को लेकर विवाद छिड़ गया।

ब्रह्मा जी का कहना था कि वे ही सृष्टि के जनक हैं, इसलिए वे सबसे श्रेष्ठ हैं। भगवान विष्णु का तर्क था कि वे ही सृष्टि का पालन-पोषण करते हैं और सभी को जीवन देते हैं, इसलिए वे ही सर्वोच्च हैं। दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़े थे और यह विवाद बढ़ता ही जा रहा था, जिससे सृष्टि में अशांति फैलने लगी।

जब यह विवाद अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया, तब अचानक उन दोनों के बीच एक विशालकाय, अग्नि से प्रज्ज्वलित, आदि-अंत रहित लिंग (स्तंभ) प्रकट हुआ। यह स्तंभ इतना विशाल था कि इसका न तो कोई आदि दिख रहा था और न ही कोई अंत। इसकी लपटें आकाश को छू रही थीं और इसका तेज असह्य था। इस अद्भुत और रहस्यमयी स्तंभ को देखकर ब्रह्मा और विष्णु दोनों ही आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने अपने विवाद को एक तरफ रख दिया और इस अलौकिक स्तंभ के रहस्य को जानने का निश्चय किया।

उन्होंने तय किया कि जो भी इस स्तंभ का आदि या अंत ढूंढ लेगा, वही तीनों में श्रेष्ठ माना जाएगा।

भगवान ब्रह्मा ने एक हंस का रूप धारण किया और स्तंभ का ऊपरी सिरा (आदि) खोजने के लिए आकाश की ओर उड़ चले।

भगवान विष्णु ने एक वराह (जंगली सूअर) का रूप धारण किया और स्तंभ का निचला सिरा (अंत) खोजने के लिए पृथ्वी के नीचे पाताल की ओर जाने लगे।

हजारों वर्षों तक दोनों देव अपने-अपने मार्ग पर यात्रा करते रहे, लेकिन उस विशाल अग्नि स्तंभ का न तो कोई आदि मिला और न ही कोई अंत। थक हार कर दोनों वापस उसी स्थान पर लौट आए जहाँ से उन्होंने यात्रा शुरू की थी।

जब दोनों वापस आए, तो ब्रह्मा जी ने अहंकारवश झूठ बोल दिया। उन्होंने कहा कि "मैं इस स्तंभ का आदि खोज कर आया हूँ।" अपने झूठ को प्रमाणित करने के लिए उन्होंने केतकी के फूल को साक्षी बनाया, जो उनके साथ ऊपर से आया था।

लेकिन भगवान विष्णु ने सत्य स्वीकार किया। उन्होंने नतमस्तक होकर कहा, "मैं इस स्तंभ का अंत नहीं ढूंढ पाया। इसका न कोई आदि है और न कोई अंत। यह तो असीम है।"

जैसे ही भगवान विष्णु ने सत्य कहा और ब्रह्मा जी ने झूठ बोला, वह अग्नि स्तंभ फट गया और उसके भीतर से स्वयं भगवान शिव (महेश) प्रकट हुए।

जैसे ही भगवान विष्णु ने सत्य कहा और ब्रह्मा जी ने झूठ बोला, वह अग्नि स्तंभ फट गया और उसके भीतर से स्वयं भगवान शिव (महेश) प्रकट हुए।

भगवान शिव अत्यंत क्रोधित थे। उन्होंने ब्रह्मा जी के झूठ बोलने और मिथ्या अभिमान करने के कारण उन्हें शाप दिया कि पृथ्वी पर उनकी (ब्रह्मा जी की) पूजा नहीं की जाएगी। (यही कारण है कि आज भी भगवान ब्रह्मा के बहुत कम मंदिर मिलते हैं।)

वहीं, भगवान विष्णु के सत्य स्वीकार करने और उनकी विनम्रता से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि वे (विष्णु) संसार के पालनकर्ता के रूप में सदैव पूजे जाएंगे और उनकी भक्ति अमर रहेगी।

इस कथा का महत्व:

शिव की सर्वोच्चता: यह कथा दर्शाती है कि भगवान शिव ही ब्रह्म के सर्वोच्च रूप हैं, जो ब्रह्मा (सृष्टि) और विष्णु (स्थिति/पालन) दोनों के मूल स्रोत हैं। वे ही आदि और अंत हैं।

सत्य की विजय: यह सत्य के महत्व को उजागर करती है। विष्णु के सत्य बोलने पर उन्हें आशीर्वाद मिला, जबकि ब्रह्मा के झूठ बोलने पर उन्हें शाप मिला।

त्रिदेवों का समन्वय: यह कथा यह भी बताती है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों अलग-अलग होते हुए भी एक ही परम सत्ता के विभिन्न पहलू हैं। वे एक-दूसरे के पूरक हैं और तीनों मिलकर ही सृष्टि का संचालन करते हैं। शिव ही वह असीम ऊर्जा हैं जिससे ये तीनों कार्य करते हैं।

यह ज्योतिर्लिंग का प्राकट्य दिवस महाशिवरात्रि के रूप में भी मनाया जाता है, जब शिव इस आदि-अंत रहित स्तंभ के रूप में प्रकट हुए थे।

गुरुत्वाकर्षण हमें न तो गिराने को उत्सुक है, न ही सम्हालने में। जब हम सीधे-सीधे चलते हैं, यही सीधापन हमें संभालता है।

जब हम तिरछे चलते हैं, हम गिरते हैं। पृथ्वी का गुरूत्वाकर्षण बल हमें गिराने की किसी आकांक्षा में नहीं है, न ही सम्हालने में। यहां संसार का नियम तटस्थ है। उसी तटस्थता के परम नियम का नाम धर्म है। उसे ही सनातन/हिंदुओं ने 'ऋत' कहा है। वह हमारी सोच की तरह पक्षपात नहीं करता कि किसी को गिरा दे, किसी को उठा दे। जैसे ही हम जीवन नियम के अनुसार ठीक से चलने लगते हैं, वह हमें संभालता है। हम जब गिरना चाहते हैं वह गिराता है। वह तो हर हालत/स्थिति में उपलब्ध है। हम जैसा भी उसका उपयोग करना चाहते हैं, उसके लिए वैसे ही द्वार/दरवाजे खुल जातें हैं। ध्यान रहे कि उसके द्वार बंद नहीं है। यदि उस दरवाजे से अपना सिर तोड़ना चाहते हैं तो, यदि हम उस दरवाजे से निकलना चाहें तो, दरवाजा हमेशा उपलब्ध/तटस्थ है। वास्तव में इस जगत में अन्याय होता ही नहीं। इस जगत में जो भी होता है, वह अंततः न्याय ही साबित होता है। जगत में कोई व्यक्ति/सरकार काम नहीं करती, यहां तो सार्वजनिन नियम ही फलितार्थ होते हैं, उन्हीं नियमों का नाम धर्म है।

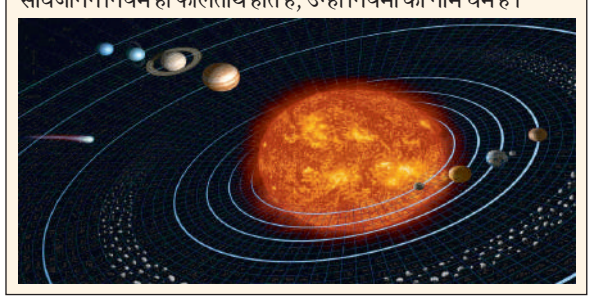

16 घंटे भूखा रहने से बदल सकती है आपकी ज़िंदगी? जानिए इंटरमिटेंट फास्टिंग का असरदार तरीका

क्या आपने कभी सोचा है कि सिर्फ खाने का समय थोड़ा बदलकर आप अपनी सेहत में बड़ा फर्क ला सकते हैं? इंटरमिटेंट फास्टिंग एक ऐसा ही तरीका है, जो आजकल बहुत लोग अपना रहे हैं। इसे कोई सख़्त डाइट नहीं, बल्कि एक स्मार्ट खाना खाने की आदत कहा जा सकता है। इसमें आप दिन के कुछ घंटों में ही खाना खाते हैं और बाकी समय शरीर को आराम देते हैं। सबसे लोकप्रिय तरीका है 16:8 – यानी 16 घंटे उपवास और 8 घंटे खाना खाने की अनुमति।

शुरुआत में थोड़ा कठिन लग सकता है, लेकिन कुछ ही दिनों में शरीर इसकी लय पकड़ लेता है और इसके फायदे खुद महसूस होने लगते हैं। इससे वजन धीरे-धीरे घटने लगता है, पाचन बेहतर होता है और दिमागी स्पष्टता बढ़ती है। खास बात ये है कि इसमें आपको ये नहीं बताया जाता कि क्या खाना है, बल्कि सिर्फ ये कि कब खाना है – और यही बात इसे बाकी डाइट्स से अलग और लंबे समय तक टिकाऊ बनाती है।

अगर आप अभी शुरुआत कर रहे हैं, तो सीधे 16 घंटे का उपवास करना मुश्किल लग सकता है। ऐसे में आप पहले 12:12 या 14:10 के फॉर्मेट से शुरुआत कर सकते हैं – यानी 12 या 14 घंटे उपवास और बाकी समय खाना। जब शरीर इसकी आदत बना ले, तब धीरे-धीरे 16:8 की ओर बढ़ें। इस तरह बिना तनाव के आप इस आदत को अपनाए रख सकते हैं और इसका अधिक लाभ उठा सकते हैं।

फास्टिंग के दौरान हाइड्रेटेड रहना बेहद ज़रूरी होता है। आप पानी तो भरपूर पिएं ही, साथ ही बिना चीनी वाली ब्लैक कॉफी, ग्रीन टी, हर्बल टी या नींबू पानी (बिना शहद या शक्कर) भी पी सकते हैं। इन पेयों से न सिर्फ उपवास नहीं टूटता, बल्कि वे भूख को भी काबू में रखते हैं और एनर्जी बनाए रखते हैं। कोशिश करें कि इन ड्रिंक्स में कैलोरी न हो – तभी असली फास्टिंग का असर देखने को मिलेगा।

उदाहरण के तौर पर एक व्यक्ति जो नाइट शिफ्ट में काम करता है, उसने अपने शेड्यूल के हिसाब से इंटरमिटेंट फास्टिंग को अपनाया। वह रात 10 बजे के बाद कुछ नहीं खाता और अगली दोपहर 2 बजे के बाद ही पहला भोजन करता है। उसकी खाने की विंडो दोपहर 2 से रात 10 बजे तक की होती है। शुरू में उसे लगता था कि रात में भूख लगेगी या कमजोरी महसूस होगी, लेकिन कुछ ही दिनों में शरीर इस रूटीन का अभ्यस्त हो गया। अब उसे न रात में भारीपन महसूस होता है, न ही दिन में थकान। बल्कि उसमें पहले से ज़्यादा ऊर्जा बनी रहती है और वजन भी धीरे-धीरे नियंत्रित होने लगा है।

अगर आप भी कोई जटिल डाइट नहीं अपना सकते या आपकी दिनचर्या अलग है, तो इंटरमिटेंट फास्टिंग एक सहज और असरदार विकल्प हो सकता है। बस थोड़ा धैर्य, अनुशासन और सही जानकारी रखें – और आप खुद अपने शरीर में फर्क महसूस करेंगे। हालाँकि, अगर आप किसी भी प्रकार की स्वास्थ्य समस्या से जूझ रहे हैं, तो इस तरह की फास्टिंग शुरू करने से पहले अपने डॉक्टर या हेल्थ एक्सपर्ट से सलाह ज़रूर लें।

मनुष्य को पांच ऋण चुकाने होते हैं

1. माता का ऋण
2. पिता का ऋण
3. गुरु का ऋण
4. धरती का ऋण
5. धर्म का ऋण

इन ऋणो को चुकाने के निम्न उपाय कहे गए हैं

1. माता का ऋण चुकाने के लिये कन्या दान करना चाहिए।
2. पिता का ऋण चुकाने के लिए संतान उत्पति करनी चाहिए।
3. गुरु ऋण चुकाने के लिए लोगों को शिक्षित करना चाहिए।
4. धरती का ऋण चुकाने के लिए कृषि करें या पेड लगाएं।
5. धर्म का ऋण चुकाने के लिये धर्म की रक्षा व धर्म का प्रचार के लिए समय दें।

रमनऋ का झुकना बहुत ज़रूरी है, केवल सर झुकाने से श्रीराम नहीं मिलते.

अंतर्राष्ट्रीय दोस्ती दिवस आज

आज 30 जुलाई है और राष्ट्रीय दिवस कैलेंडर पर अंतर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस है। हम आज के अंतर्राष्ट्रीय दिवस का उपयोग निकट और दूर के लोगों के बीच मित्रता को बढ़ावा देने के लिए कर रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय दोस्ती दिवस

==========

दोस्त हमें हँसाते हैं, हमारी शिकायतें सुनते हैं और ज़रूरत पड़ने पर हमारा साथ देते हैं। दोस्त खास तौर पर इसलिए ज़रूरी होते हैं क्योंकि वे हमें प्रोत्साहित करते हैं और हमारे जीवन के महत्वपूर्ण पलों का जश्न मनाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस हमें अपनी संस्कृति, देश या पृष्ठभूमि से बाहर के लोगों से दोस्ती करने और उनके साथ रिश्ते बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। दोस्त कई तरह के होते हैं। गहरी दोस्ती वो होती है जिसके साथ हम लगभग हर बात साझा करते हैं, राज़ छिपाते हैं और अपनी नासमझियों पर हँसते हैं। ये हमारे परिवार का हिस्सा होते हैं। जान-पहचान वाले दोस्त हमें अप्रत्याशित जगहों पर अचानक मिल जाते हैं और हमारे चेहरे पर उस पल मुस्कान ला देते हैं। ये दोस्त हमेशा यादें ताज़ा करते हैं और हमें हँसाते हैं।

अरस्तू द्वारा मित्रता के 3 वर्गीकरण

==========

उपयोगिता मित्रता - सहकर्मी, व्यापारिक साझेदार, अन्य पेशेवर मित्र जिसमें मित्रता का उद्देश्य पारस्परिक उद्देश्य होता है।

आनंद मित्रता - एक ऐसा व्यक्ति जिसके साथ रहना दूसरों को अच्छा लगता है क्योंकि वह तेज़ बुद्धि वाला या दूसरों को प्रोत्साहित करने वाला होता है। एक ऐसा व्यक्ति जिसके साथ मित्रता का उद्देश्य आपसी आनंद की खोज करना होता है, जैसे मछली पकड़ना, गेंदबाजी करना, या अन्य शौक।

अच्छे मित्र - आपसी सम्मान और एक-दूसरे के गुणों की प्रशंसा, भले ही मतभेद हों।

निकोमैचेन एथिक्स , अरस्तू

चूँकि यह दिन विभिन्न संस्कृतियों की मित्रता की खोज करता है, इसलिए पूर्वाग्रहों को दरकिनार कर दें। धैर्य रखें, क्योंकि भाषा की बाधाएँ बातचीत को धीमा कर सकती हैं, लेकिन उसे रोक नहीं पाएंगी।

अंतर्राष्ट्रीय मैत्री दिवस का इतिहास

==========

1919 में, फ्रेंडशिप डे की शुरुआत ग्रीटिंग कार्ड के प्रचार के रूप में हुई थी। 1940 तक, यह लुप्त हो गया था। संयुक्त राष्ट्र ने 1997 में अंतर्राष्ट्रीय फ्रेंडशिप डे की स्थापना के लिए एक विश्वव्यापी पहल का प्रस्ताव रखा। 2011 में, संयुक्त राष्ट्र के एक अधिकारी ने शांति प्रयासों को प्रेरित करने और लोगों, देशों और संस्कृतियों के बीच सेतु बनाने के लिए इस दिन की घोषणा की।

त्याग, समर्पण और वीरता के मूल्यों से ही 'अखण्ड भारत' का होगा निर्माण - डॉ. जितेन्द्र सिंह

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम समिति, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं जम्मू और कश्मीर पीपल्स फोरम के संयुक्त तत्वावधान में कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में दिल्ली विश्वविद्यालय के कन्वेंशन हॉल में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत अखंड भारत' विषयक कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. जितेन्द्र सिंह, राज्यमंत्री, प्रधानमंत्री कार्यालय ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत और भी आगे बढ़कर शांति की कीमत चुकाने में नहीं, शांतिभंग करने वालों से कीमत वसूलने में विश्वास रखता है। ऑपरेशन सिन्दूर ने भारत की छवि को सैन्य और कूटनीतिक दोनों ही स्तरों पर बदल कर रख दिया है। पहले भारत रिएक्टिव था, आज भारत न सिर्फ़ एक्टिव है बल्कि प्रोएक्टिव भी है। आपने अखंड भारत पर चर्चा करते हुए कहा कि यह कोई नारा नहीं है, बल्कि 'अखंड भारत' वास्तव में भारत के विचार में ही निहित है।

डॉ. जितेन्द्र सिंह ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के कई अनछुए पहलुओं पर चर्चा करते हुए यह प्रश्न किया कि आखिर कांग्रेस को आजादी की मांग करने में 1931 के लाहौर अधिवेशन का इंतजार क्यों करना पड़ा? उन्होंने जोर देकर कहा कि 'भगत सिंह के बलिदान ने देश भर को जागृत कर किया, और आजादी की मांग जब देश के प्रत्येक घर से उठनी शुरू हुई तो कांग्रेस को भी यह याद आया। उन्होंने कांग्रेस द्वारा राष्ट्रीय हितों की अवहेलना पर प्रश्न खड़ा करते हुए बताया कि यदि 1947 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरु ने एकतरफा संघर्षविराम नहीं किया होता, तो पीओके आज भारत का हिस्सा होता और पीओके से संबंधित कोई समस्या ही नहीं होती। उन्होंने कहा कि हम वीर सावरकर के प्रति कांग्रेस द्वारा चलाए गए नैरेटिव के शिकार बने, क्योंकि कहीं न कहीं हम उस झूठे नैरेटिव का खंडन नहीं कर पाए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने कारगिल विजय दिवस मनाने की प्रासंगिकता पर विचार करते हुए कहा कि यह दिन भारत के सैनिकों के शौर्य,त्याग और पराक्रम को याद करने का दिन है। प्रो. सिंह ने कारगिल विजय के नायकों कैप्टन विक्रम बत्रा, मेजर राजेश सिंह आदि बलिदानियों को श्रद्धांजलि देने के अलावा तासी नामग्या नामक चरवाहे का भी जिक्र किया कि कैसे उसने पाकिस्तान के घुसपैठ को समझा और सैन्य बलों को इस खतरे से परिचित कराया। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन विजय से ऑपरेशन सिन्दूर तक भारत में गुणात्मक बदलाव हुए हैं। आज भारत प्रतिकार करने में देर नहीं लगाता। यह बदलता हुआ भारत है, जो पहलगाम का बदला 22 मिनट में लेता है और सिंधु जल समझौते को स्थगित करने की ताकत रखता है।

कार्यक्रम के संयोजक और मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम समिति, दिल्ली विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. निरंजन कुमार ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि 'एक भारत श्रेष्ठ भारत अखंड भारत' विषयक यह कार्यक्रम न केवल राष्ट्र की एकता एवं अखंडता को अटूट रखने का उद्घोष है बल्कि अखंड भारत के स्वप्न को दोहराने का संकल्प भी है। आज हमारे युवा देश की अखंडता को अक्षुण्ण रखने का संकल्प लें।

जम्मू और कश्मीर पीपल्स फ़ोरम के अध्यक्ष महेंद्र मेहता ने 1947 के विभाजन और 1990 के कश्मीर पलायन पर चर्चा करते हुए कहा कि अपनी माटी छोड़कर जान बचाने को विवश समुदाय को न्यायालय द्वारा भी समुचित रूप से न्याय नहीं मिल पा रहा है।

सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर बृजेश पाण्डेय (से.नि.) ने कहा कि 'एक भारत' का सूत्र ऋग्वेद से निकला है। भारत माँ का जयघोष ही सैनिक के जीवन का मूल मंत्र है, इस जयघोष से सैनिक के ख़ून में इज़ाफ़ा होता है।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सभी उच्च पदाधिकारियों सहित विभागाध्यक्ष, प्राचार्य, संकाय सदस्य, शिक्षक, शोधार्थी, छात्र और समाज के अन्य गणमान्य लोग भी उपस्थित रहे, कार्यक्रम का संचालन डॉ. शोभना सिन्हा ने और धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अनिल कुमार ने किया।

हस्तलिखित पत्र द्वारा दुधना सुभाष नगर में जय डेयरी के पास रहने वाले राजकुमार की पत्नी पूजा देवी द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

शिकायत विवरण: 24 जुलाई, 2025 को शाम लगभग 6:04 बजे एक अनजान नंबर से उनके फ़ोन पर कॉल आया। उनके बेटे ने फ़ोन उठाया और फ़ोन करने वाले ने उससे अभद्र भाषा में बात की। जब पूजा देवी ने फ़ोन उठाया, तो फ़ोन करने वाले ने धमकी दी कि अगर उन्होंने अपने पति को कुछ नहीं समझाया, तो वह उन्हें और उनके परिवार को नुकसान पहुँचाएगा।

जानकारी का अभाव: शिकायत में पूजा देवी ने कहा कि उन्हें अपने पति और फोन करने वाले के बीच किसी विवाद या मुद्दे की जानकारी नहीं है, और उन्हें यह भी नहीं पता कि फोन करने वाले को उनका फोन नंबर कैसे मिला।

कार्रवाई हेतु अनुरोध: लिखित शिकायत के द्वारा पूजा देवी द्वारा बताया गया की वह अपने 13 और 11 वर्ष की आयु के बच्चों की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं, तथा प्राप्तकर्ता, जो संभवतः एक पुलिस अधिकारी या प्राधिकारी है, से अनुरोध करती हैं कि वह मामले का संज्ञान लें तथा फोन करने वाले के विरुद्ध उचित कार्रवाई शुरू करें।

जानकारी के अनुसार पूजा देवी को राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति के महासचिव रवि राठौर एवं मिथुन द्वारा भी इस बाबत हर संभव मदद का आश्वासन दिया गया है।

विपक्ष चुनाव आयोग के सवालों के घेरे में है

राजेश कुमार पासी

बिहार में चुनाव आयोग मतदाता सूची का गहन पुनरीक्षण कर रहा है और पूरा विपक्ष इसके विरोध में मानसून संसद सत्र को बर्बाद करने में लगा हुआ है। लोकसभा और राज्यसभा की कार्यवाही को रोककर विपक्षी दल सरकार से मांग कर रहे हैं कि वो चुनाव आयोग द्वारा किए जा रहे मतदाता सूची के सत्यापन पर रोक लगा दे। हैरानी की बात यह है कि विपक्षी दल इस मांग को लेकर सुप्रीम कोर्ट भी गए थे लेकिन माननीय अदालत ने मतदाता सूची के पुनरीक्षण पर रोक लगाने से इंकार कर दिया। क्या विपक्षी दल यह नहीं जानते कि चुनाव आयोग एक संवैधानिक संस्था है और यह स्वतंत्र रूप से काम करती है। चुनाव आयोग संविधान द्वारा दिए गए अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए अपने संवैधानिक कर्तव्यों का पालन कर रहा है। सवाल यह है कि जो विपक्ष पिछले एक साल से संविधान की लाल किताब सिर पर उठाये घूम रहा है, वो इसी संविधान के काम में रोड़े अटका रहा है। देखा जाये तो संविधान की गर्दन पर वाकू रखकर विपक्ष इसकी रक्षा के लिए चिल्ला रहा है और संविधान जनता से बचाओ-बचाओ की गुहार लगा रहा है। कितनी अजीब बात है कि हत्यारा ही बचाने की बात कर रहा है। चुनाव आयोग पर विपक्ष आरोप लगा रहा है कि वो भाजपा के साथ मिला हुआ है और इसकी जीत के लिए नए-नए तरीके खोजता रहता है। सवाल यह है कि क्या ईवीएम से अब कोई परेशानी नहीं है. अभी तक पूरा विपक्ष ईवीएम के मुद्दे पर हंगामा कर रहा था। अब राहुल गांधी कह रहे हैं कि मतदाता सूची में हेरफेर करके भाजपा चुनाव की चोरी कर रही है। सवाल यह है कि जब भाजपा ईवीएम से चुनाव जीत सकती है तो इसे मतदाता सूची में गड़बड़ी करने की क्या जरूरत है। अगर मतदाता सूची में हेरफेर करके चुनाव जीता जा सकता है तो ईवीएम हैक करने की क्या जरूरत है।

दिल्ली पुलिस अकादमी ने त्रैमासिक समाचार पत्र "बढ़ते कदम - आगे बढ़ते कदम" के अंक का विमोचन किया

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: दिल्ली पुलिस आयुक्त श्री संजय अरोड़ा ने आज पुलिस मुख्यालय में दिल्ली पुलिस अकादमी (डीपीए) के त्रैमासिक समाचार पत्र ₹बढ़ते कदम - आगे बढ़ते कदम₹ के उद्घाटन अंक का विमोचन किया।

इस समारोह में विशेष पुलिस आयुक्त (प्रशिक्षण) श्री संजय कुमार, संयुक्त निदेशक श्री आसिफ मोहम्मद अली और दिल्ली पुलिस अकादमी के उप निदेशक सह संपादक श्री मोहम्मद अली उपस्थित थे।

उद्घाटन सत्र के दौरान, विशेष पुलिस आयुक्त श्री संजय कुमार ने समाचार पत्र के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह दिल्ली पुलिस अकादमी द्वारा शुरू की गई प्रशिक्षण पहलों की गतिविधियों और प्रगति को दर्शाएगा। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि यह समाचार पत्र प्रशिक्षकों और प्रशिक्षुओं दोनों की रचनात्मकता को बढ़ावा देने, प्रेरित करने और प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करेगा।

दिल्ली पुलिस आयुक्त, श्री संजय अरोड़ा ने इस प्रकाशन को प्रकाशित करने में दिल्ली पुलिस अकादमी के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने समाचार पत्र की गुणवत्ता और प्रासंगिकता की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह जानकारीपूर्ण है और पुलिस अधिकारियों को अकादमी द्वारा संचालित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों से अपडेट रहने में मदद करेगा।

₹बढ़ते कदम - आगे बढ़ते₹ समाचार पत्र का प्रकाशन त्रैमासिक रूप से किया जाएगा और इसमें दिल्ली पुलिस अकादमी की प्रशिक्षण गतिविधियों, सर्वोत्तम प्रथाओं और सफलता की कहानियों पर लेख, रिपोर्ट और अपडेट शामिल होंगे।

युग परिवर्तन समिति के संस्थापक और अध्यक्ष डॉक्टर पिंकी पाल जी का जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया

परिवहन विशेष न्यूज

लखनऊ- युग परिवर्तन समिति के संस्थापक और अध्यक्ष डॉक्टर पिंकी पाल जी का जन्मदिन लखनऊ में बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर एक निशुल्क नेचुरोपैथी कैंप का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य स्थानीय समुदाय को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना था। इस अवसर पर दो महत्वपूर्ण पदोन्नतियाँ भी की गईं भोला ठाकुर जी को युग परिवर्तन समिति के राष्ट्रीय महासचिव के रूप में पदोन्नत किया गया और अनीता ठाकुर जी को उत्तर प्रदेश महिला प्रदेश अध्यक्ष के रूप में पदोन्नत किया गया।

निशुल्क नेचुरोपैथी कैंप में कई अनुभव डॉक्टरों की टीम ने स्थानीय लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कीं। इस टीम में डॉ धर्मेंद्र शुक्ला (आयुर्वेदिक चिकित्सक), डॉक्टर अमृता राय (होलिस्टिक हेल्थ विशेषज्ञ), डॉक्टर अरुणा शर्मा (आयुर्वेद चिकित्सक), अनीता ठाकुर, सत्येंद्र मिश्रा, अरुण मिश्रा, रवि कुमार, ऋषि पाल, अर्चना वर्मा, और शोभना वर्मा ,शोभा पाल, शैलेन्द्र पाल, शनि ,माधुरी तिवारी शामिल थे। इस शिविर में लोगों को नेचुरोपैथी के माध्यम से स्वास्थ्य सुधार के बारे में जानकारी दी गई और उनका स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

डॉक्टर पिंकी पाल जी ने कहा, ₹हमारा उद्देश्य समाज में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाना और लोगों को नेचुरोपैथी जैसे प्राकृतिक उपचार विधियों के बारे में शिक्षित करना है।₹

इस अवसर पर, डॉक्टर पिंकी पाल जी ने भोला ठाकुर जी को युग परिवर्तन समिति के राष्ट्रीय महासचिव और अनीता ठाकुर जी को उत्तर प्रदेश महिला प्रदेश अध्यक्ष के रूप में पदोन्नत करने की घोषणा की। भोला ठाकुर जी और अनीता ठाकुर जी दोनों को उनकी नई भूमिकाओं के लिए बधाई दी गई और उन्हें संगठन के लिए उनके योगदान के लिए सराहा गया।

इस अवसर पर भोला ठाकुर जी ने डॉक्टर पिंकी पाल जी को भारतीय संविधान की एक किताब गिफ्ट की। डॉक्टर पिंकी पाल जी ने इस गिफ्ट के लिए भोला ठाकुर जी का धन्यवाद किया।

इस अवसर पर युग परिवर्तन समिति के कार्यकर्ताओं ने डॉक्टर पिंकी पाल जी को उनके जन्मदिन पर बधाई दी और उनके नेतृत्व में काम करने का संकल्प लिया। भोला ठाकुर जी और अनीता ठाकुर जी ने भी अपने नए पदों के साथ संगठन के लिए अपने समर्पण को दोहराया।

कार्यक्रम के अंत में डॉक्टर पिंकी पाल जी ने सभी का धन्यवाद किया जिन्होंने उनके जन्मदिन को इतना खास बनाया। उन्होंने कहा, "यह दिन मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मेरे काम को समाज से मिल रहे समर्थन का प्रतीक है।"

युग परिवर्तन समिति के इस आयोजन ने एक बार फिर से साबित किया कि स्वास्थ्य और समाज सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता कितनी मजबूत है।

भय, चिंता और तनाव को दूर करके मन को शांति प्रदान करता है महामृत्युंजय मंत्र का जप : आचार्य रामनिहोर त्रिपाठी

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गौरा नगर कॉलोनी स्थित सिद्ध पीठ दुर्गा मन्दिर में श्रावण मास के अवसर पर मां भगवती जगदम्बा के पावन सानिध्य में महा मृत्युंजय एवं हनुमान चालीसा का दिव्य अनुष्ठान चल रहा है।जिसके अंतर्गत प्रख्यात धर्माचार्य पण्डित रामनिहोर त्रिपाठी के आचार्यत्व में वेदज्ञ ब्राह्मणों के द्वारा सवा लाख महामृत्युंजय का जप एवं ग्यारह हजार हनुमान चालीसा पाठ किए जा रहे हैं।इसके अलावा श्रावण के प्रत्येक सोमवार को फूल बंगला सजाए जा रहे हैं।

आचार्य रामनिहोर त्रिपाठी ने कहा कि धर्मग्रंथों के अनुसार महामृत्युंजय जप का अत्यधिक धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व है। यह भगवान शिव को समर्पित एक शक्तिशाली मंत्र है।जिसका जाप करने से अकाल मृत्यु से रक्षा होती है, स्वास्थ्य लाभ होता है और जीवन में सुख-समृद्धि आती है।

उन्होंने कहा कि महामृत्युंजय मंत्र का जप करने से व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक रोगों से मुक्ति मिलती है और जीवन में सुख, शांति, और समृद्धि आती है, और धन-धान्य में वृद्धि होती है। यह मंत्र भय, चिंता और तनाव को दूर करके मन को शांति प्रदान करता है।श्रावण मास में इसके सवा लाख जप करने पर भगवान शिव की विशेष कृपा प्राप्त होती है, विवाह में आने वाली समस्त बाधाएं दूर होती हैं और संतान प्राप्ति की मनोकामना पूरी होती है।

आचार्य रामनिहोर त्रिपाठी ने कहा कि रामायण के अनुसार भगवान शंकर के अवतार श्रीहनुमानजी महाराज को भगवान श्रीराम का अत्यधिक प्रिय भक्त कहा गया है।मां जानकी के आशीर्वाद से सप्त चिरंजीवियों में भी उनका प्रमुख स्थान है।इसीलिए अनुष्ठान के अंतर्गत श्रीहनुमान चालीसा के ग्यारह पाठ किए जा रहे। कन्हैया लाल अग्रवाल (स्वीटी सुपारी वाले), प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, प्रमुख समाजसेवी सुरेशचंद्र सक्सैना, पूर्व पार्षद मनोज सक्सैना, नीरज सक्सैना, डॉ. राधाकांत शर्मा, भरत लाल आदि की उपस्थिति विशेष रही।

लाडकी बहीण योजना – भाईचारा बेमिसाल

[लाडकीबाई से लाडका भाऊ तक – योजना की दास्तान]

जब सरकारें योजना बनाती हैं, तो जनता लाभ उठाती है। लेकिन जब योजना बहनों के लिए हो और लाभ भाइयों को मिल जाए, तो समझिए कि हम प्रगति की उस सीढ़ी पर चढ़ चुके हैं जहाँ लिंगभेद का पूर्ण अंत हो चुका है – कम से कम बैंक खाते में।

महाराष्ट्र में 'लाडकी बहीण योजना' एक नेक उद्देश्य के साथ शुरू हुई थी कि समाज की बेटियों को आर्थिक संबल मिले, उनके विकास में रुकावट न आए, और माता-पिता बेटी होने पर दुखी न हों। योजना चल निकली। मंत्री जी ने घोषणा की, ₹अब हर लाडकी को मिलेगा सशक्तिकरण का चैक!₹ लेकिन शायद मंत्री जी यह भूल गए कि भारत की जनता योजना की लाडली नहीं, चतुर बहन है।

कुछ समझदार पुरुषों ने योजना का उद्देश्य तो पूरी श्रद्धा से समझा — ₹लाडकी बहनों के लिए पैसा₹ — पर उस उद्देश्य को अपने लाभ के चश्मे से देखा। कहते हैं, भावना को समझने के लिए हृदय चाहिए, लेकिन लाभ समझने के लिए आधार कार्ड, बैंक खाता और एक अदद जुगाड़ काफी होता है।

और जुगाड़ की तो क्या कहें! किसी ने खुद को ₹भावनात्मक रूप से महिला₹ घोषित कर दिया, किसी ने कहा ₹हमारा नाम लाडकू नहीं, लाडकी है – आधार पर टाइपो है₹, और किसी ने गाँव की सबसे बुज़ुर्ग महिला को गोद ले लिया – सिर्फ इसलिए कि उसका खाता पहले से योजना में शामिल था।

अब जब मंत्री जी ने खुद स्वीकार कर लिया है कि पुरुषों के खातों में पैसा गया है, तो इससे यह स्पष्ट होता है कि योजना सिर्फ ₹लाडकी बहीण₹ नहीं, ₹लाडका भाऊ₹ के लिए भी उतनी ही संवेदनशील थी। आखिर समता और समरसता की मिसाल इसी को तो कहते हैं!

एक गाँव में जब बैंक अधिकारी ने किसी रमेश भाऊ से पूछा, ₹तुम योजना के लिए पात्र कैसे हो सकते हो?₹ तो उन्होंने सीना चौड़ा कर कहा, ₹हमारे घर में दो बहनें हैं, उनकी चिंता में हम बीमार रहते हैं, तो ये पैसा हमारी चिंता की दवा है!₹ अधिकारी कुछ नहीं बोले, शायद वह भी योजना के 'लाभार्थी' थे।

सरकारें अक्सर कहती हैं कि योजना की निगरानी के लिए पुख़्ता इंतज़ाम हैं। और वह इंतज़ाम भी इतने पुख़्ता हैं कि जब तक जनता खुद सोशल मीडिया पर रील नहीं बनाती या टीवी डिबेट में मुंह से नहीं कहती — ₹हां भैय्या, पैसा मेरे खाते में आया₹, तब तक किसी को भनक तक नहीं लगती।

और रही बात नाम की, तो इसमें भी जनता ने कमाल कर दिखाया। एक महाशय ने अपनी बेटी का नाम रखा ₹लाडकीबाई₹ और योजना में दो बार आवेदन किया — एक बार खुद के नाम से और दूसरी बार बेटी के नाम से। जब अधिकारी ने पूछा, ₹दोनों के नाम एक जैसे क्यों हैं?₹, उन्होंने जवाब दिया, ₹हम परंपरा के अनुसार नाम रखते हैं, और परंपरा दो बार भी आ सकती है!₹

ऐसा नहीं है कि यह सब बिना साजिश के हो गया। यह तो भारतीय प्रतिभा की वह झलक है, जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'जुगाड़' नाम से जाना जाता है और जिसे सरकारें योजनाओं में कभी रोक नहीं पाई हैं।

इस पूरी गड़बड़ी के बाद जब एक पत्रकार ने मंत्री से पूछा कि ₹अब क्या कार्रवाई होगी?₹, तो मंत्री जी बोले – ₹हमने जाँच समिति बना दी है, और जल्द ही दोषियों के खिलाफ सख़्त कदम उठाए जाएंगे।₹ यह सुनते ही जनता मुस्कुरा दी — क्योंकि भारत में 'जाँच समिति' बनना, ठीक वैसा ही है जैसे घर में छत टपकने पर 'फोटो खींचकर' छत को मरम्मत के लिए प्रेरित करना।

अब जब योजना का लाभ पुरुषों को भी मिल गया है, तो कुछ उत्साही संगठनों ने सरकार से अनुरोध किया है कि इसका नाम बदलकर ₹लाडकी-लाडका समता योजना₹ कर दिया जाए, ताकि सबको लगे कि भारत वाकई एक समभाव वाला राष्ट्र बन चुका है।

तो अगली बार जब कोई योजना आए, तो आप तैयार रहिए – क्योंकि उद्देश्य चाहे जो भी हो, असली खेल तो खाता नंबर और आधार लिंकिंग का है। और इसमें जो तेज़ है, वही सच्चा 'लाडका' है – चाहे योजना किसी की भी हो।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

सेहत के प्रति फिक्रमंद नहीं हैं नीतियां

कुमार कृष्णन

मौजूदा जन-विरोधी, कॉर्पोरेट, बाजार आधारित संचालित स्वास्थ्य नीतियां न केवल लोगों के बेहतर स्वास्थ्य के प्रति जरूरी संवेदनशीलता के अभाव से ग्रस्त हैं बल्कि वे हर कदम पर आर्थिक लूट-खसोट को अंजाम दे रही हैं। ये नीतियां लोगों की सेहत के प्रति कतई फिक्रमंद नहीं हैं और लोकतांत्रिक जिम्मेदारियों-जवाबदेहियों की भी अनदेखी कर रही हैं। इसका सबसे बुरा प्रभाव देश की करोड़ों करोड़ दलित-वंचित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, विकलांग एवं आर्थिक रूप से कमजोर समुदायों को झेलना पड़ रहा है।यह जन स्वास्थ्य अभियान-इंडिया द्वारा भोपाल, मध्य प्रदेश में तीन दिवसीय कार्यशाला में विमर्श के दौरान पेश उदाहरणों, तथ्यों, सवालों और बहसों से स्पष्ट हुआ।

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में जन स्वास्थ्य अभियान-इंडिया भोपाल, की ओर से आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला में देश भर से 11 राज्यों के 43 प्रतिनिधियों समेत सार्वजनिक स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए दशकों से कार्यरत बुद्धिजीवी, ग्रासरूट साथी, नेटवर्क एवं नागरिक सामाजिक संगठनों के 53 व्यक्ति सम्मिलित हुए। गुणवत्तापूर्ण, समावेशी एवं समतामूलक जनस्वास्थ्य तथा देखभाल सेवाओं की मजबूती और सार्वभौमीकरण से जुड़ी चिकित्सकीय सैद्धांतिक अवधारणाओं, ग्राससरूट प्रयासों और विविध व्यापक मुद्दों पर गहन चर्चा हुई।कार्यशाला में रिसोर्स पर्सन के रूप में जेएनयू के रिटायर्ड प्रोफेसर प्रो रितु प्रिया, डॉ. वीना शत्रुघ्न, एक्सपर्ट ड्रग इश्यू अमितावा गुहा, चाइल्ड हेल्थ एक्सपर्ट डॉ वंदना प्रसाद, ईश्वर जोशी, रेमा नागराजन, सर्वोदय प्रेस सर्विस के संपादक राकेश दीवान, जगदीश पटेल, प्रबीर चटर्जी, टीबी पर डब्ल्यूएचओ समिति के सदस्य डॉ. अनुराग भार्गव, डॉ संजय नागरल, डॉ अनंत फड़के, इनायत, जया वेलेंकर, चंद्र कुमारी, मुकुट लोचन, वी पी सूर्यवंशी, महजबीन भट्ट, अमूल्य निधि, एस. आर. आजाद, गौरांगो महापात्र, मित्ररंजन, चंद्रकांत, राही रियाज़, पुनीता, प्रशांत, राकेश चंदौरे, मंती सिंह एवं संजीव सिन्हा ने प्रतिभाग किया। यह फैसला लिया गया कि इस वर्ष के अंत में जन स्वास्थ्य अभियान – इंडिया का राष्ट्रीय सम्मेलन और उसके पहले 10 राज्यों- उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, जम्मू कश्मीर, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, असम, गुजरात, राजस्थान आदि- में क्षेत्रीय सम्मेलन और राज्य स्तरीय कार्यशालाएं आयोजित की जाएगी। साथ ही विभिन्न मुद्दों पर कार्यरत सहमना संगठनों, नेटवर्कों और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्यरत जमीनी संगठनों को जोड़ते हुए देशव्यापी अभियान चलाया जाएगा। कार्यशाला के दौरान आगामी संसदीय मानसून सत्र मद्देनजर प्रतिनिधियों ने मांग की कि किसी भी नीति को बनाने में आम जनता की स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं को चिन्हित करते हुए उनके जीने के अधिकार और स्वास्थ्य अधिकार को संरक्षित-सुरक्षित रखने की दिशा में ठोस कदम उठाये जाएं। लेकिन यह सिर्फ सदिच्छाओं और खोखले वायदों से संभव नहीं है। वर्तमान नीतियों की गहन समीक्षा तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की मजबूती, सुचारु संचालन एवं उन तक लोगों की पहुंच बढ़ाने के लिए जनपक्षीय राजनीतिक इच्छाशक्ति की जरूरत है।

भीतरघाती राजनीति पर जनआक्रोश "इन्हें सिर्फ नेता मत समझिए, ये राजनीतिक चेहरे देश के दुश्मनों के साथी हैं"

परिवहन विशेष न्यूज

ये नेता अपने बयानों से बार-बार देश की संप्रभुता, सुरक्षा बलों और संविधानिक संस्थाओं पर प्रश्नचिह्न खड़ा करते हैं।--- इनकी वाणी में छिपा ज़हर अब खुलकर सामने आने लगा है, इनको ना संबिधान का डर हैं, ना जनता का, ना वोटर का, आखिर इनको इतना दुस्साहस देता कौन हैं?

आगरा, संजय सागर सिंह। देश में सक्रिय कुछ राजनीतिक चेहरों की भाषा और बयानों पर सवाल उठाते हुए आम नागरिकों का आक्रोश अब मुखर होता जा रहा है। सोशल मीडिया से लेकर जन चर्चाओं तक एक आवाज़ उभर रही है।

देशहित में, आज़ की चर्चा में लोगों का कहना हैं कि ₹इन राजनीतिक चेहरों को केवल नेता समझने की भूल न करें, इनकी फितरत और बोली देशविरोधी मानसिकता को उजागर करती है।"

आम मजदूर नागरिकों का कहना है कि भारत में रहकर देश का अन्न खाने वाले कुछ नेता ऐसे बयान दे रहे हैं, जो न केवल राष्ट्र की एकता और अखंडता को चुनौती देते हैं, बल्कि दुश्मन देशों की भाषा बोलते प्रतीत होते हैं। ऐसे नेता नीतिगत असहमति के नाम पर देश को कमजोर करने का कार्य कर रहे हैं, और यह केवल विचारधारात्मक विरोध नहीं, बल्कि भीतरघात की सीमा तक जा पहुंचा है।

लोगों का आरोप है कि ये नेता अपनी सोशल मीडिया पोस्टों और सार्वजनिक मंचों पर दिए गए बयानों से बार-बार देश की संप्रभुता, सुरक्षा बलों और संविधानिक संस्थाओं पर प्रश्नचिह्न खड़ा करते हैं।संविधान की किताब जेब में लेकर घूमने वालों और उनके समर्थक ईको सिस्टम 19 का सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना ही एक मात्र मकसद हैं। सफ़ेद झूठ बोलके सवाल खडे करना और भाग जाना और ज़ब सदन में चर्चा हो तो धैर्य से जबाब नहीं सुनना बल्कि उल्टा ग़रीब, मजदूर, किसानों एवं ग़रीब दलितों को भड़काके, बेबुनियाद आरोप लगाके देश में अशांति फैलाने काम करते हैं।

सिर्फ़ सत्ता पाने के लालच में देश के न्यायालय, क़ानून, संबिधान, सैना और सब की बुराई करते हैं और ऊपर से धमकी भी देते हैं। लेक़िन इनकी ये खतरनाक साजिश और देश विरोधी सडयंत्र अब भारतीयों को ही नहीं बल्कि पूरी दुनियां को पता चल गया हैं, इसीलिए ये परेशान हैं, और ग़रीब, मजदूर किसानों और दलितों का वोट और सपोट पाने के लिए सड़क से संसद तक देश की एकता को तोड़ने के लिए हंगामा खड़ा करते हैं। लेक़िन इनके चीखने, चिल्लाने, कोसने, और विलाप करने की नौटंकी आम नागरिक वोटर समझ गए हैं। इनकी वाणी में छिपा ज़हर अब खुलकर सामने आने लगा है। इनको ना संबिधान का डर हैं, ना जनता का, ना वोटर का आखिर इनको इतना दुस्साहस देता कौन हैं?

मजदूर नागरिकों की अपील स्पष्ट है ₹ऐसे राजनीतिक चेहरों की गतिविधियों पर सतर्क दृष्टि रखी जाए। इनके एक-एक शब्द, एक-एक पोस्ट और हर बयान की बारीकी से जांच होनी चाहिए, क्योंकि ये वही हैं जो देश के भीतर रहकर, देश से ही लड़ रहे हैं।"

राष्ट्रभक्ति में, जनता अब सजग हो रही है। लोगों ने आह्वान किया है कि देशहित में, ऐसे नेताओं से सावधान रहें, सतर्क रहें और इनकी असलियत को पहचानें। यह समय है, जब लोकतंत्र की आड़ में देशविरोधी गतिविधियों को अनदेखा करने की भूल नहीं दोहराई जा सकती।

साइकिल से स्कूल जा रहे बच्चों को अज्ञात वाहन ने रौंदा दो मासूमों की मौके पर मौत

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूँ। नोट_जांच का विषय जब सरकार ने सभी स्कूलों की छुट्टी की है तो ये नौबत कैसे आई जनता जवाब जानना चाहती है इससे पहले भी कई जगह जिले भर में स्कूल खुल खुलने के वीडियो वायरल हुए है तो प्रशासन ने गंभीरता से लिया क्या?

साइकिल से स्कूल जा रहे बच्चों को अज्ञात वाहन ने रौंदा दो मासूमों की मौके पर मौत एक गंभीर।

सहसवान कोतवाली क्षेत्र के गांव सिंगौला निवासी प्रेमपाल की 12 वर्षीय पुत्री अंशू, 10 वर्षीय पुत्र अंकित साइकिल से स्कूल जा रहे थे। गांव के ही महीपाल की 10 वर्षीय पुत्री खुशबू भी साइकिल पर बैठी थी। सिलहरी गांव से पहले सड़क पार करते समय अज्ञात वाहन ने साइकिल में टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि घायल बच्चे छिटक कर सड़क किनारे दूर दूर जा रहे। हादसे के बाद चालक वाहन लेकर फरार हो गया। हादसे में अंकित और अंशू की मौके पर ही मृत्यु हो गई। खुशबू को सीएचसी लाया गया यहां से हालत गंभीर होने पर जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायल बालिका को अस्पताल पहुंचाने के साथ ही शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया।

राष्ट्र सेवा के साथ मानव सेवा में भी आगे सीआरपीएफ के जवान-पायल लाठ

रक्त दान करके मनाया सीआरपीएफ रेसिंग डे

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर,छत्तीसगढ़। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 87वें स्थापना दिवस तथा समूह केन्द्र बिलासपुर के 21वें स्थापना दिवस के अवसर पर राज कुमार, पु0अ0म0से0, समूह केन्द्र, बिलासपुर के मार्गदर्शन में समूह केन्द्र अस्पताल बिलासपुर तथा पायल एक नया सवेरा वेलफेयर फाउंडेशन, स्व रविशंकर शिक्षण प्रशिक्षण एवं जन कल्याण समिति के संयुक्त तत्वावधान में व्यापक पैमाने पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें समूह केन्द्र,बिलासपुर/वर्तमान में चल रहे डी0 आई0 जी0 प्रशिक्षण के प्रशिक्षुओं सहित 200 अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारी तथा अन्य कार्मिकों द्वारा मानवता के लिए रक्तदान किया गया। जरूरत पड़ने पर आपातकालीन स्थिति में ब्लड बैंक के माध्यम से बल के सदस्य तथा कैम्प के बाहर अन्य जरूरतमंद को Blood दिया जा सके।इस अवसर पर सामाजिक संस्था 'एक नया सवेरा' द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में देशभक्ति और मानवता की अनमोल मिसाल देखने को मिली। इस विशेष दिन पर जवानों ने न सिर्फ़ बंदूक से देश की रक्षा का संकल्प दोहराया, बल्कि अपनी रगों का लहू देकर ज़िंदगी बचाने का वादा भी निभाया।

सैकड़ों जवानों ने पूरे जोश, समर्पण और गर्व के साथ रक्तदान किया। यह कोई सामान्य रक्तदान शिविर नहीं था — यह एक जज़्बा था, एक भावना थी जो यह बताती है कि राष्ट्र की सेवा सिर्फ़ सीमा पर नहीं, बल्कि हर ज़रूरतमंद की साँसों तक पहुँच कर भी की जा सकती है।

'एक नया सवेरा' की संस्थापक पायल भावुक होकर कहती हैं —

"आज हमने सिर्फ़ खून नहीं, उम्मीदें देखीं हैं... ये जवान जब रक्तदान कर रहे थे, तब ऐसा लग रहा था जैसे राष्ट्र की आत्मा मुस्कुरा रही हो। ये बूँदें किसी माँ की संजीवनी बनेंगी, किसी पिता की राहत और किसी बच्चे की ज़िंदगी बनेंगी।"

आज का दिन सिर्फ़ राइजिंग डे नहीं था — यह दिन था जब रक्त के कणों में देशभक्ति गूंज रही थी, जब 'एक नया सवेरा' ने जवानों संग मिलकर सैकड़ों ज़िंदगियों को एक नई सुबह दी। यह आयोजन हमेशा याद रखा जाएगा — एक ऐसी सुबह के रूप में, जहाँ वर्दी ने सेवा का एक और रूप दिखाया।

इस अवसर पर मनोज कुमार, कमाण्डेन्ट, डॉ0 अशलेशा कोहद (मुख्य चिकित्सा अधिकारी), पायल लाठ /अध्यक्ष, चंचल सलूजा, सचिव प्रसांत सिंह राजपूत, उपाध्यक्ष रोनित अग्रवाल तथा उनके टीम के सदस्यगण, नील कमल भारद्वाज, उप कमाण्ड (प्रशासन), नीलिमा नर्सरी, उप कमाण्ड (मंत्रालय), कल्पवती ठाकुर, (सहायक कमाण्डेन्ट), सैलेन्द्र सिंह, सिमोनिया, (सहायक कमाण्डेन्ट), विवेकानन्द प्रसाद (सहायक कमाण्डेन्ट), जयप्रकाश भावसार, सहायक कमाण्ड (मंत्रालय), सुनील कुमार पाण्डेय, सहायक कमाण्ड (मंत्रालय), पिंटू नर्सरी, सहायक कमाण्ड (मंत्रालय) तथा साथ में समस्त केन्द्र तथा चिकित्सालय केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल बिलासपुर के अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारी, जवान एवं महिला उपस्थित थे।

हरियाली तीज़ पर सिविल डिफेंस ने पुलिस प्रशासन के साथ संभाली ठाकुर बाके बिहारी मंदिर की कमान

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा: हरियाली तीज के अवसर पर जिला अधिकारी नियंत्रक नागरिक सुरक्षा मथुरा के आदेश अनुसार हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी विश्व प्रसिद्ध श्री बाके बिहारी महराज मन्दिर वृंदावन पर बाहर से आने वाले लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं की सेवा में अपर जिला अधिकारी नमामि गंगे प्रभारी सिविल डिफेंस राजेश यादव एवं उप नियंत्रक मुनेश कुमार गुप्ता चीफ वार्डन राजीव अग्रवाल डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी डिप्टी डिविजनल वार्डन राजेश कुमार मित्तल सीनियर स्टाफ ऑफीसर दीपक चतुर्वेदी बैंकर के नेतृत्व में पोस्ट वार्डन अशोक यादव की टीम के द्वारा श्री बाके बिहारी मंदिर वृंदावन भीड़ नियंत्रण एवं यातायात व्यवस्था बनाने में पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर सेवा दी गई बही भीड़ में अपने परिवार से जो बिछड़ गए थे उनको पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर सिविल डिफेंस मथुरा ने परिवारों को मिलवाया और बुजुर्गों को हाथ पकड़ कर दर्शन कराने में मदद करते नजर आए पोस्ट वार्डन अशोक यादव एवं राम कुमार चौहान ने बताया कि सिविल डिफेंस मथुरा के वार्डन एवं स्वयंसेवक की ड्यूटी दो शिफ्टों में लगाई गई पहली शिफ्ट सुबह 6 बजे से 2 बजे तक और दूसरी शिफ्ट दुपहर 2 बजे से रात्रि 10 बजे तक वृंदावन में मंदिर एवं यमुना घाटों के अलावा जगह जगह पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। ड्यूटी में पोस्ट वार्डन गिरीश वार्ष्णेय, राम कुमार चौहान, अशोक यादव, मुकर शर्मा, राम सैनी, नरेश अग्रवाल, राजेंद्र सैनी, हरिनारायण, दीपक, शैली अग्रवाल, सुनैना, यतीन्द्र, गोविंद, विशाल, गौरव, विक्रम, मुकेश शर्मा, श्याम बाबू, आदि वार्डन एवं स्वयंसेवक हरियाली तीज के मौके पर पुलिस प्रशासन के साथ अपनी सेवाएं देते रहे।

श्रीहित रासमंडल में धूमधाम से प्रारंभ हुआ भक्तिमती ऊषा बहिनजी का त्रिदिवसीय जन्म शताब्दी महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गोविन्द घाट स्थित अखिल भारतीय निर्मोही बड़ा अखाड़ा (श्रीहित रासमंडल) में भक्तिमती रसिक सिद्ध संत ऊषा बहिनजी (बोबो) का त्रिदिवसीय जन्म शताब्दी महोत्सव श्रीमहंत लाड़िली शरण महाराज के पावन सानिध्य में अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ प्रारंभ हो गया है।महोत्सव का शुभारभ संतों व भक्तों के द्वारा भक्तिमती ऊषा बहिनजी के चित्रपट के समक्ष दीप प्रज्वलित करके किया गया।तत्पश्चात संतप्रवर बिहारीदास भक्तमाली महाराज ने व्यासपीठ से भक्तिमती संत ऊषा बहिनजी के द्वारा रचित पदों का गायन किया।साथ ही उनके जीवन चरित्र का विस्तार से वर्णन करते हुए कहा कि भक्तिमती ऊषा बहिनजी ब्रज वृंदावन की अपूर्व निधि थीं। वे धाम निष्ठ, नाम निष्ठ व धर्म परायण सन्त थीं।ब्रज वृन्दावन के प्रति उनकी अपार श्रद्धा थी।उन्होंने यहां अपने सेव्य ठाकुर उत्सव बिहारी की सेवा करते हुए अनेकों पदों की रचना की। संतों और ब्रजवासियों से उनका अटूट स्नेह था।

उनकी पावन स्मृति में स्वर्गीय विजय भैया ने ब्रज निधि प्रकाशन की स्थापना की थी। जिसके द्वारा उनके साहित्य के अलावा अन्य सत्साहित्य का प्रकाशन किया जा रहा है।वे सदैव अपने आराध्य की साधना में लीन रहती थीं।

सायं काल प्रख्यात रासाचार्य स्वामी पुलिन बिहारी शर्मा के निर्देशन में श्रीसखाजी द्वारा प्रदत्त लीला पर आधारित रासलीला की अत्यन्त नयनाभिराम व चित्ताकर्षक प्रस्तुति दी गई।

इससे पूर्व श्रीराधा वल्लभ संप्रदाय के समाज मुखिया राकेश दुबे की मुखियायी में मंगल बधाई समाज गायन किया गया।साथ ही खेल-खिलौने, मेवा-मिष्ठान एवं वस्त्रादि लुटाए गए। इसके अलावा सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा भी हुआ।जिसमें असंख्य व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

इस अवसर पर श्रीमहंत फूलडोल बिहारीदास महाराज, महामंडलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री, महन्त दंपति शरण महाराज (काकाजी), महन्त श्यामसुन्दर दास महाराज, महन्त सुन्दर दास महाराज, रासाचार्य स्वामी कुंजबिहारी शर्मा, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, परम-हितधर्मी डॉ. चन्द्रप्रकाश शर्मा, भागवताचार्य डॉ. हरेकृष्ण शरद, महन्त हरिशंकर नागा, दीपा भटनागर, निर्मला शर्मा, पुष्पा गुप्ता, राधारमण शर्मा,काकी बहिनजी, आलोक भटनागर, श्यामसुंदर शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा, महन्त लाड़िली दास, राजाचार्य देवेंद्र वशिष्ठ, राधावल्लभ वशिष्ठ आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

भारत में रेबीज बीमारी से ग्रस्त आवारा कुत्तों के काटने से बच्चे व बुजुर्ग शिकार हो रहे हैं-सुप्रीम कोर्ट ने 28 जुलाई 2025 को स्वत:संज्ञान लिया

6 वर्ष की बच्ची को रेबीज बीमारी ग्रस्त कुत्ते ने काटा- न्यूज़पेपर में खबर को पढ़कर सुप्रीम कोर्ट बेंच ने स्वत: संज्ञान लिया-याचिका दाखिल होगी

पूरे भारत की स्थानीय निकायों (नगरपरिषद,नगरपालिका नगरनिगम महानगर पालिका)को पशु जन्म नियंत्रण (कुत्ते) नियम 2001 का सख़्ती से पालन करना समय की मांग-**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

भारत क़े करीब-करीब हर राज्य क़े हर शहरी क्षेत्र क़े हर शहर व ग्रामीण क्षेत्र के हर गांव में अगर हम देखेंगे तो हमेंआवारा या लावारिस कुत्ते कहीं काम कहीं अधिक संख्या में जरूर दिखेंगे। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र, यह मानता हूं कि इससे शायद किसी नागरिक को कोई आक्षेप नहीं होगा। परंतु इन आवारा कुत्तों द्वारा जब नागरिकों की बस्ती में आतंक फैलाना, पैदल चलने वालों को काटना, गाड़ी वालों के पीछे दौड़कर काटने की कोशिश करना जैसी गतिविधियां होती है तो इससे रेबीज नामक बीमारी होने की संभावना बढ़ जाती है, वह भी अक्सर यह घटनाएं बच्चों में बुजुर्गों के साथ अधिक हो रही है, जो रेखांकित करने वाली बात है। यदि इस तरह की घटनाएं हो रही हो तो इसके लिए भारतीय कानून में इन पशुओ जानवरों की रक्षा वह नियंत्रण के अनेकों कानून बने हुए हैं जैसे पशु जन्म नियंत्रण (कुत्ते) नियम 2001, भारतीय न्याय संहिता (नया आईपीसी) की धारा 325,326, पशु कल्याण बोर्ड इत्यादि अनेक अधिनियम नियम व वैधानिक निकाय हैं परंतु विशेषकर कुत्तों पर नियंत्रण के लिए स्थानीय निकायों जैसे नगरपरिषद नगरपालिका नगरनिगम महानगरपालिका इत्यादि जवाबदार हैं, इन्हें अब जागना जरूरी है। इस विषय पर आज हम चर्चा इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि सोमवार दिनांक 28 जुलाई 2025 को माननीय सुप्रीम कोर्ट की दो जजों की बेंच ने भारत के पेपर टाइम्स ऑफ़ इंडिया में छपी एक खबर जिसमें बताया गया था कि दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र में 30 जून 2025 को एक 6 वर्ष की बेटी को रेबीज बीमारी से ग्रस्त कुत्ते द्वारा काटा गया, और इलाज के दौरान 26 जुलाई 2025 को उसकी मृत्यु हो गई इस खबर को पेपर में पड़कर सुप्रीम कोर्ट के दो जजों की बेंच ने इसपर स्वतः संज्ञान लेकर, एक याचिका दाखिल कर, मुख्य न्यायाधीश के समक्ष पेश करने का आदेश जारी किया है, जिसकी चर्चा विस्तार से हम नीचे पैराग्राफ में करेंगे।इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, पूरे भारत की स्थानीय निकायों जैसे नगरपरिषद नगर पालिका नगरनिगम महानगर पालिका इत्यादि को पशु जन्म नियंत्रण (कुत्ते) नियम 2001 का सख़्ती से पालन करना समय की मांग है।

साथियों बात अगर हम सुप्रीम कोर्ट के दो सदस्सीय बेंच द्वारा एक प्रसिद्ध न्यूज़पेपर में कुत्ते क़े काटने पर 6 वर्ष की बालिका की मृत्यु का स्वतःसंज्ञान के इस आदेश को विस्तार से जानने की करें तो, सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को अखबार में प्रकाशितसमाचार आवारा कुत्तों से त्रस्त शहर, बच्चे भुगत रहे कीमत पर स्वतःसंज्ञान लिया है। अदालत ने एक रिट याचिका दर्ज की है, जिसमें यह संज्ञान लिया गया है कि किस प्रकार नवजात शिशु, बच्चे और बुजुर्ग अवैक्सीनेटेड (टीकाकरण रहित) आवारा कुत्तों के काटने के कारण रेबीज जैसी घातकबीमारी का शिकार हो रहे हैं। बेंच ने खबर पर संज्ञान लेते हुए आदेश जारी करते हुए कहा कि सप्ताह की शुरुआत हो चुकी है और हमें सबसे पहले इस बेहद चिंताजनक और खतरनाक समाचार का स्वतः संज्ञान लेना चाहिए, जो आज के टाइम्स ऑफ इंडिया के दिल्ली संस्करण में 'सिटी होउंडेड बाय स्ट्रास एंड किड्स पे प्राइस' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। समाचार में कुछ चौंकाने वाले और परेशान करने वाले आंकड़े और तथ्य शामिल हैं। हर दिन, शहरों और बाहरी इलाकों में सैकड़ों कुत्तों के काटने के मामले सामने आ रहे हैं, जिससे रेबीज फैल रहा है और अंततः नवजात शिशु, बच्चे और बुजुर्ग इस भयानक बीमारी का शिकार हो रहे हैं। उन्होंने कहा रजिस्ट्री इस याचिका को स्वतः प्रेरित याचिका के रूप में दर्ज करे। यह आदेश और समाचार रिपोर्ट माननीय मुख्य न्यायाधीश के समक्ष उपयुक्त आदेशों के लिए प्रस्तुत की जाए। इस गंभीर स्थिति का सबसे ज्यादा असर छोटे बच्चों और बुजुर्गों पर पड़ रहा है, जिनकी रेबीज से मौतें हो रही हैं। बेंच ने इन मौतों को ₹डरावना और परेशान करने वाला₹ बताया। मामले की गंभीरता को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने रजिस्ट्रर को निर्देश दिया है कि इस पूरे मामले को एक स्वतःसंज्ञान याचिका के रूप में पंजीकृत किया जाए। साथ ही, संबंधित आदेश और समाचार रिपोर्ट को भारत के मुख्य न्यायाधीश के समक्ष प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया है।

साथियों बात अगर हम इस रेबीज नामक बीमारी की करें तो, बता दें कि रेबीज एक गंभीर वायरल बीमारी है, जो आमतौर पर संक्रमित जानवरों की लार से इंसानों में फैलती है। दुनियाँ भर में रेबीज के अधिकांश मानवीय मामलों के लिए संक्रमित कुत्ते जिम्मेदार हैं। इसके अलावा, चमगादड़, लोमड़ी, रैकून, कोयोट और स्कंक जैसे जंगली जानवर भी रेबीज फैला सकते हैं। रेबीज के लक्षण आमतौर पर काटने के 2-3 महीने बाद दिखाई देते हैं, लेकिन यह 1 सप्ताह से 1 वर्ष या उससे भी अधिक समय तक भिन्न हो सकता है। शुरुआती लक्षण फ्लू जैसे हो सकते हैं, जिनमें शामिल हैं- बुखार, सिरदर्द दर्द।

साथियों बातअगर हम स्वतःसंज्ञान के इस आदेश को गहराई से समझने की करें तो,आए दिन देश में आवारा कुत्तों के आतंक की खबरें देखने और सुनने को मिलती हैं। आवारा कुत्तों का सबसे ज्यादा शिकार बुजुर्ग और बच्चे हो रहे हैं। कई लोगों की मौत भी हो चुकी है, बल्कि रेबीज जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ गया है। ऐसी घटनाओं को देखते हुए कर्नाटक सरकार ने आवारा कुत्तों के आतंक को कम करने के लिए खाना स्कीम शुरु की है। अब आवारा कुत्तों के मामले की गंभीरता को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने भी स्वतः संज्ञान लिया है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली और इसके आसपास के इलाकों में आवारा कुत्तों के हमलों ने लोगों की नींद उड़ा दी है। एक रिपोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट का ध्यान खींचा। इस खबर में बताया गया कि शहरों और बाहरी इलाकों में हर दिन सैकड़ों लोग आवारा कुत्तों के शिकार हो रहे हैं। इन हमलों से रेबीज जैसी जानलेवा बीमारी फैल रही है, जिसका सबसे ज्यादा खतरा मासूम बच्चे और बुजुर्ग हो रहे हैं। इस मुद्दे को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने 28 जुलाई को स्वतः संज्ञान लेते हुए इस मामले को उठाया।बेंच ने इस खबर को 'बेहद परेशान करने वाला' बताया। जस्टिस ने कहा कि यह खबर बहुत डरावनी है। हर दिन सैकड़ों लोग कुत्तों के काटने से पीड़ित हैं। रेबीज की वजह से छोटे बच्चे और बुजुर्ग अपनी जान गंवा रहे हैं। उन्होंने एक दुखद घटना का जिक्र किया, जिसमें दिल्ली के रोहिणी इलाके में 30 जून को एक 6 साल की बच्ची को एक रेबीज बीमारी से ग्रस्त कुत्ते ने काट लिया। इलाज के बावजूद बच्ची की 26 जुलाई को उसकी मृत्यु हो गई। डॉक्टरों ने शुरू में उसकी बिगड़ती हालत को सामान्य बुखार समझा, जिससे सही समय पर इलाज नहीं हो सका। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले को गंभीरता से लिया। यह कदम तब उठाया गया, जब कोर्ट ने देखा कि नगर निगम और प्रशासन आवारा कुत्तों की बढ़ती संख्या और उनके टीकाकरण में नाकाम रहे हैं।यह पहली बार नहीं है जब सुप्रीम कोर्ट ने इस मुद्दे पर ध्यान दिया है। बता दें 15 जुलाई 2025 की बेंच ने भी आवारा कुत्तों को खाना खिलाने की जगहों को लेकर चिंता जताई थी। कोर्ट का कहना है कि जानवरों के प्रति दया और लोगों की सुरक्षा में संतुलन जरूरी है। अब उम्मीद है कि इस मामले में जल्द सख्त कदम उठाए जाएंगे, ताकि मासूम बच्चों और बुजुर्गों की जान बचाई जा सके।भारतीय दंड संहिता की धारा 428 में 10 रूपए से कम मूल्य के पशु को मारना या अपंग करना शामिल था, जबकि धारा 429 में 50 रूपए या उससे अधिक मूल्य के पशु को मारना या अपंग करना शामिल था।भारतीय न्याय संहिता में, इन अपराधों को अब धारा 325 और 326 में शामिल किया गया है, जो पशुओं को नुकसान पहुंचाने से संबंधित हैं, लेकिन अब मूल्य सीमा का उल्लेख नहीं है, बल्कि सभी प्रकार के पशुओं को शामिल किया गया है।

साथियों बात अगर हम 22 जुलाई 2025 को संसद में इससे संबंधित एक सवाल का जवाब देने की करें तो केंद्रीय मंत्री द्वारा 22 जुलाई को संसद में साझा किए गए आंकड़ों के अनुसार, पिछले वर्ष कुत्ते के काटने के कुल मामलों की संख्या 37,17,336 थी, जबकि 'संदेहास्पद मानव रेबीज मौतें' 54 थीं।उन्होंने कहा कि आवारा कुत्तों की आबादी को नियंत्रित करने की जिम्मेदारी नगर पालिकाओं की है तथा वे उनकी आबादी को नियंत्रित करने के लिए पशु जन्म नियंत्रण कार्यक्रम लागू कर रहे हैं।उन्होंने यह भी कहा कि केंद्र ने पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 के तहत पशु जन्म नियंत्रण नियम, 2023 को अधिसूचित किया है, जो आवारा कुत्तों के बधियाकरण और एंटी-रेबीज टीकाकरण पर केंद्रित कदमों के बारे में विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा कि उनके मंत्रालय ने नवंबर 2024 में राज्यों को एक परामर्श जारी किया था, जिसमें उनसे स्थानीय निकायों के माध्यम से एबीसी कार्यक्रम और संबंधित गतिविधियों को लागू करने के लिए कहा गया था, ताकि ₹आवारा कुत्तों के हमलों से बच्चों, विशेष रूप से छोटे बच्चों की सुरक्षा₹ सुनिश्चित की जा सके।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारत में रेबीज बीमारी से ग्रस्त आवारा कुत्तों के काटने से बच्चे व बुजुर्ग शिकार हो रहे हैं-सुप्रीम कोर्ट ने 28 जुलाई 2025 को स्वतःसंज्ञान लिया 6 वर्ष की बच्ची को रेबीज बीमारी ग्रस्त कुत्ते ने काटा-न्यूजपेपर में खबर को पढ़कर सुप्रीम कोर्ट बेंच ने स्वतः संज्ञान लिया-याचिका दाखिल होगीपूरे भारत की स्थानीय निकायों (नगरपरिषद,नगरपालिका नगर निगम महानगर पालिका)को पशु जन्म नियंत्रण (कुत्ते) नियम 2001 का सख़्ती से पालन करना समय की मांग।

आयशर प्रो प्लस रेंज हुई पेश, लाइट और मीडियम ड्यूटी ट्रकों में मिलेंगे कई बेहतरीन फीचर्स

Eicher Pro Plus कमर्शियल वाहन निर्माता आशयर मोटर्स की ओर से भारतीय बाजार में प्रो प्लस रेंज को पेश कर दिया गया है। नई रेंज में लाइट और मीडियम ड्यूटी ट्रकों को ऑफर किया जा रहा है। इसमें किस तरह की खासियतों को दिया गया है। कितने ट्रकों को नई सीरीज में पेश किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में बड़ी संख्या में कमर्शियल वाहनों का उपयोग सामान को लाने और ले जाने के लिए किया जाता है। इस सेगमेंट में कई निर्माताओं की ओर से ट्रकों को ऑफर किया जाता है। कमर्शियल वाहन निर्माता Eicher की ओर से भी Pro Plus रेंज को बाजार में पेश किया गया है। इनमें किस तरह की खासियत दी गई हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

आयशर ने पेश की नई सीरीज

आयशर की ओर से प्रो प्लस सीरीज के साथ नए ट्रकों को भारतीय बाजार में पेश कर दिया गया है। नई सीरीज में पेश किए गए ट्रकों में कई बेहतरीन फीचर्स को भी ऑफर किया जा रहा है।

क्या है खासियत

आयशर की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक नई प्रो प्लस सीरीज में कुल छह ट्रकों को पेश किया गया है। इनको लाइट और मीडियम ड्यूटी के मुताबिक ऑफर किया गया है। जिनमें हाई पेलोड क्षमता, एक्सटेंडेड कार्गो बॉडी विकल्प, एसी और एर्गोनोमिक केबिन के साथ ही आयशर लाइव और माई आयशर के जरिए कनेक्टिविटी को दिया गया है।

अधिकारियों ने कही यह बात

नई सीरीज को पेश करने के बाद वीईसीवी के लाइट और मीडियम ड्यूटी ट्रक के ईवीपी विशाल माथुर ने कहा कि ईंधन दक्षता, अपटाइम और डिजिटलीकरण पर हमारे निरंतर ध्यान के साथ, प्लस रेंज ग्राहकों को प्रदर्शन और स्थिरता का एक लाभदायक संयोजन प्रदान करती है। ये ट्रक न केवल आज की जरूरतों के लिए बल्कि भारत की आपूर्ति श्रृंखलाओं की तेजी से विकसित हो रही मांगों के लिए भी बनाए गए हैं। नई रेंज गहन ग्राहक जुड़ाव और भविष्य-केंद्रित इंजीनियरिंग का परिणाम है। उद्योग में अग्रणी वाहन उत्पादकता को ड्राइवर उत्पादकता में सुधार करने वाली सुविधाओं के साथ जोड़कर, हम ग्राहकों को वास्तव में एक विभेदित मंच प्रदान कर रहे हैं जो इंट्रा-सिटी और लंबी दूरी के अनुप्रयोगों, दोनों का समर्थन करता है।

कौन से ट्रक हैं शामिल

निर्माता की ओर से नई सीरीज में जिन ट्रकों को पेश किया गया है। उनमें लॉन्ग हॉल परफॉर्मर ट्रक Eicher Pro 3018XP Plus, अर्बन और इंटरसिटी के लिए Eicher Pro 2118XP Plus, आराम और शहर के लिए Eicher Pro 2059 Plus के साथ ही Eicher Pro 2095XP Plus, Eicher Pro 2049 Plus और Eicher Pro 2110XPT Plus जैसे ट्रक शामिल हैं।

TVS मोटर कंपनी का बड़ा प्लान Norton की 4 नई मोटरसाइकिलें जल्द होंगी लॉन्च!

TVS मोटर कंपनी 2025-26 तक यूके भारत और कुछ यूरोपीय बाजारों में चार नई नॉर्टन मोटरसाइकिलें पेश करेगी। सबसे पहले 1200cc चार-सिलेंडर सुपरबाइक आएगी। टीवीएस नॉर्टन को वैश्विक स्तर पर रिलांच करने की योजना बना रही है। कंपनी का कहना है कि ये उत्पाद पोर्टफोलियो में विविधता लाएंगे और लाभ मार्जिन बढ़ाएंगे। नॉर्टन ने 1200cc बाइक का टीजर जारी किया है जो 4 नवंबर 2025 को पेश हो सकती है।

नई दिल्ली। TVS मोटर कंपनी वित्तिय वर्ष 2025-26 के अंत तक यूकेस भारत और कुछ यूरोपीय बाजारो में चार नई Norton मोटरसाइकिल को पेश करने की तैयारी कर रही है। कंपनी की तरफ से जारी की गई एक रिपोर्ट में बताया गया है कि सबसे पहले एक फ्लैगशिप 1200cc चार-सिलेंडर सुपरबाइक को पेश किया जाएगा। इसके आने के बाद कंपनी अपना बाकी मोटरसाइकिल को भारत समेत यूके और यूरोपिय बाजार में उतारेगी।

TVS का Norton को ग्लोबल रिलॉन्च का प्लान

TVS मोटर कंपनी Norton को ग्लोबल लेवल पर रिलॉन्च करने की प्लानिंग कर रही है। इस ग्लोबल लॉन्चिंग की पहली बाइक 1200cc फ्लैगशिप सुपरबाइक होगी। कंपनी का कहना है कि ये आगामी उत्पाद उसके पोर्टफोलियो में विविधता लाने और लाभ मार्जिन को बढ़ावा देने में मदद करेंगे, जो पिछली रिपोर्टों के अनुरूप है कि अगले साल तक छह नए मॉडल पाइपलाइन में हैं।

हाल के समय में Norton तीन मोटरसाइकिल की बिक्री करती है, जो Commando 961, V4SV और V4CR है। इन सभी को यूके में कंपनी की सोलिहुल प्लांट में बनाई जाती है। हालांकि, अब TVS 2020 में करीब 150 करोड़ रुपये में इस कंपनी को खरीद लिया है, तब इसके आने वाले मॉडल तमिलनाडु के होसुर प्लांट में में बनाए जा सकते हैं।

Norton की पहली बाइक का टीजर

हाल ही में Norton ने अपनी आगामी 1200cc बाइक की टेललाइट का एक टीजर जारी किया है, जिसमें दिखाया गया है कि नॉर्टन अपनी पहली बाइक 4 नवंबर 2025 को पेश करेगी, जो EICMA का पहला दिन भी है। यह एक लॉन्च इवेंट भी हो सकता है। इस टीजर के आने के तुरंत बाद फ्लैगशिप 1200cc बाइक को टेस्टिंग के दौरान देखा गया था, जिसे TVS के MD सुदर्शन वेणु चला रहे थे।

TVS का कहना है कि स्वामित्व के पिछले पांच वर्षों में Commando और V4 प्लेटफॉर्म के री-इंजीनियर किए गए वर्जन का इस्तेमाल करके विरासत आदेशों को पूरा करना शामिल रहा है। आगामी लाइनअप 126 साल पुराने ब्रांड के लिए एक नया अध्याय चिह्नित करेगा।

भारी बारिश से महिंद्रा XUV700 में आई बड़ी खराबी, शख्स ने बयां किया दर्द

Viral Video Mahindra XUV700 के सनरूफ से पानी टपकने का एक वीडियो वायरल हो रहा है। वीडियो में दिख रहा है कि बारिश के दौरान कार के अंदर पानी रिस रहा है जिससे मालिक परेशान है। ऐसा सनरूफ के ड्रेनेज सिस्टम में रुकावट के कारण हो सकता है। इसलिए बारिश के मौसम में सनरूफ की नियमित सफाई और रखरखाव जरूरी है।

नई दिल्ली। Mahindra भारत की टॉप SUV निर्माता कंपनियों में से एक है। कंपनी भारत में Mahindra XUV700 को कई बेहतरीन फीचर्स के साथ ऑफर करती है, जिसमें पैनोरमिक सनरूफ भी शामिल है। वहीं, यह कंपनी की सबसे ज्यादा बिकने वाली गाड़ियों में से एक भी है। हाल ही में XUV700 का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें इसके सनरूफ से पानी टपक रहा है। आइए XUV700 के सनरूफ से पानी टपकने के वायरल वीडियो के बारे में विस्तार में जानते हैं।

XUV700 का वायरल वीडियो

Mahindra XUV700 के सनरूफ से पानी टपकने के वायरल वीडियो को चंडीगढ़ का बताया जा रहा है। वीडियो में महिंद्रा XUV700 मालिक को भारी बारिश के दौरान अपनी सनरूफ के साथ एक बड़ी समस्या का सामना करते हुए दिखाया गया है। वीडियो में व्यक्ति ड्राइवर की सीट पर अपनी गोद में एक तौलिया लिए बैठा दिख रहा है, छत से टपकते पानी को सोखने की कोशिश कर रहा है।

वीडियो में कार की रूफ में लगे स्पीकर्स के जरिए केबिन में बारिश का पानी रसता हुआ दिखाई दे रही है, जो पैनोरमिक सनरूफ के पास लगे हुए हैं। व्यक्ति को कार की क्वालिटी के बारे में शिकायत करते हुए सुना जा सकता है। व्यक्ति वायरल वीडियो में कहता हुआ सुनाई दे रहा है कि जहां अधिकांश कारें बारिश के पानी को बाहर रखने के लिए बनाई जाती हैं, वहीं यह आपको अंदर से बारिश का आनंद लेने देती है।

ऐसा क्यों होता है?

पैनोरमिक सनरूफ को वाटर रेजिस्टेंस के लिए डिजाइन किया गया है, लेकिन यह पूरी तरह से पानी को नहीं रोक पाते हैं। इसके ग्लास के चारों तरफ एक रबर की परत होती है, जिसे बीडिंग कहा जाता है। उसके नीचे एक छोटा सा ड्रेनेज सिस्टम या चैनल और पाइप होते हैं, जो किसी भी पानी को बाहर निकलते हैं, जो अंदर की तरफ रिसता है। अगर यह पानी धूल, सूखे पत्तों या मलबे की वजह से बंद हो जाती है, तो पानी कार के केबिन में रिसना शुरू कर देता है, जैसा वीडियो में देखने के लिए मिल रही है। यह समस्या खास करके उन गाड़ियों में देखने के लिए मिलती है, जिनके सनरूफ की सफाई सही से नहीं की जाती है।

इस समस्या से कैसे बचें?

जब आप बरिश के मौसम में अपनी कार की सर्विस करवाते हैं, तो उसी दौरान आपको सनरूफ को भी जरूर चेक करवा लेना चाहिए। ऐसा करने से ड्रेन पाइप क्लीन हो जाती है। इस पाइप को थोड़ी सी गंदगी या एक पत्ती भी सिस्टम को बंद कर सकती है और रिसाव का कारण बन सकती है। नियमित सफाई और रखरखाव इस समस्या को पूरी तरह से रोक सकता है।

मुंबई के बाद राजधानी दिल्ली में खुलेगा Tesla का दूसरा शोरूम, जगह भी हुई तय, जानें कब होगा शुरू

अमेरिकी इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता टेस्ला की ओर से भारत में अपनी कारों की बिक्री को शुरू कर दिया गया है। निर्माता की ओर से पहले शोरूम को शुरू कर दिया गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अब दिल्ली में भी जगह तय हो चुकी है। राजधानी में किस जगह पर टेस्ला का शोरूम खोला जाएगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। अमेरिकी वाहन निर्माता Tesla भारत में अपनी कारों की बिक्री कर रही है। निर्माता की ओर से देश में पहले शोरूम को मुंबई में खोला जा चुका है। इसके बाद विस्तार करते हुए निर्माता अपने दूसरे शोरूम को जल्द शुरू कर सकती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक दूसरे शोरूम को किस शहर में किस जगह पर कब तक शुरू किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Tesla का दूसरा शोरूम खोलने की तैयारी

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक टेस्ला की ओर से भारत में दूसरे शोरूम को खोलने की तैयारी की जा रही है। जानकारी के मुताबिक इस शोरूम को उत्तर भारत में शुरू (Tesla India expansion) किया जाएगा।

किस शहर में होगा शुरू

जानकारी के मुताबिक टेस्ला की ओर से दूसरे शोरूम को देश की राजधानी दिल्ली (Tesla Delhi showroom) में शुरू किया जाएगा। फिलहाल निर्माता की ओर से इस बारे में कोई औपचारिक जानकारी नहीं दी गई है।

दिल्ली में जगह हुई तय

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक टेस्ला के दूसरे शोरूम के लिए दिल्ली में जगह भी तय हो गई है। दिल्ली में एयरोसिटी में टेस्ला का दूसरा शोरूम शुरू (Aerocity Tesla location) किया जाएगा। जानकारी के मुताबिक दिल्ली में दूसरे शोरूम को अगस्त 2025 में शुरू किया जा सकता है।

एयरोसिटी में क्यों होगा शुरू

टेस्ला के दूसरे शोरूम को एयरोसिटी में शुरू करने का प्रमुख कारण यह है कि यह जगह न सिर्फ इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट के पास है। बल्कि यह जगह गुरुग्राम के भी काफी पास है। इसके साथ ही इस जगह पर दुनियाभर के कई बड़ी कंपनियों के होटल भी मौजूद हैं।

जुलाई में शुरू हुआ है पहला शोरूम

एलन मस्क की टेस्ला ने भारत में अपने पहले शोरूम को 15 जुलाई 2025 को ही मुंबई में शुरू किया है। टेस्ला की ओर से तभी Model Y को भी लॉन्च किया गया है। जिसके कुछ समय बाद ही इस गाड़ी के लिए देशभर में बुकिंग को भी शुरू कर दिया गया था।

कितनी है Model Y की कीमत

टेस्ला की ओर से ऑफर की जा रही Model Y की भारत में एक्स शोरूम कीमत 59.89 लाख रुपये है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 67.89 लाख रुपये है।

कई बार वैज्ञानिक, डॉक्टर, विद्यार्थी पढ़ते हुए गुनगुनाते हैं इस से एकाग्रता और रचनात्मकता का विकास होता है

विजय गर्ग

क्या आपने काम करते समय कोई गीत या ध्वनि गुनगुनाई है। अवश्य गुनगुनाई होगी। आपको यह पता होना चाहिए कि गुनगुनाना मात्र छोटी-सी बात नहीं है, अपितु इस गुनगुनाहट में बहुत सारे जीवन के सकारात्मक सार छिपे हुए हैं। यह गुनगुनाहट 'आंतरिक ध्वनि चिकित्सा' है जो व्यक्ति के जीवन के टूटे-फूटे तारों की मरम्मत करती है और उनके अंदर एक नई ऊर्जा एवं ध्वनि का संचार करती है। नादब्रह्म, ध्यान में गुंजार ऊर्जा का असीम स्रोत है। इस संदर्भ में ओशो कहते हैं कि, 'हां, यह ऊर्जा का एक बड़ा स्रोत है। हम अपने जीवन के स्रोतों को नहीं जानते और यह नहीं जानते कि उन स्रोतों से कैसे जुड़ें?' शोध बताते हैं कि 'भंवरे की तरह गुनगुनाना यानी कि हमिंग करने से न केवल तनाव कम होता है, अपितु इससे मूड भी सकारात्मक होता है। शरीर के अंदर से विषैले तत्व बाहर निकलते हैं और पेट संबंधी समस्याएं भी दूर होती हैं। स्वीडिश वैज्ञानिकों ने भी अपने एक शोध में यह पाया कि 'गुनगुनाने से मस्तिष्क में ऑक्सीजन की मात्रा में सुधार होता है।'

जब हमारा तन किसी ध्वनि को मन से गुनगुनाता है तो तन-मन का कंपन एक तालमेल में आ जाता है और उनका संघर्ष खत्म हो जाता है। इस संघर्ष के खत्म होने से ऊर्जा का ह्रास होने से बच जाता है। मन को शांति का अहसास होता है। गुनगुनाना हमारे मस्तिष्क की वेगस तंत्रिका को उत्तेजित करता है, जो पैरासिम्पेथेटिक सिस्टम से जुड़ी हुई होती है। इससे तनाव कम होता है और मानसिक स्पष्टता बढ़ जाती है। इससे सेरोटोनिन और डोपामाइन जैसे लाभकारी न्यूरो हार्मोंस का रिसाव बढ़ता है। ये दोनों ही हॉर्मोन खुशी उत्पन्न करने वाले माने जाते हैं। इनकी उत्पत्ति से व्यक्ति को खुशी एवं सुख का अनुभव होता है। गुनगुनाना संगीत का ही एक भाग है। भारतीय संगीत और इसके रागों में रोगों को दूर करने की अद्भुत शक्ति होती है।

प्राचीन काल में राजा-महाराजा जब युद्ध से लौट कर आते थे तो वे तन-मन से शिथिल और क्लान्त रहते थे। ऐसे में वे संगीतकारों को राजदरबार में बुलाकर उनसे राग सुना करते थे। कई बार तो वे गायक के साथ-साथ गुनगुनाते भी थे। इस गुनगुनाहट से उनकी थकान, चिंता सब गायब हो जाती थी तो और वे फिर से तरोताजा हो जाते थे। अपने अंदर ऊर्जा एवं स्फूर्ति का संचार कर वे राजकाज संभालते थे और गुनगुनाते हुए प्रजा के दुख दूर करते थे। अकबर के दरबार के नवरत्नों में से एक तानसेन को संगीत में उच्च कोटि की सिद्धि प्राप्त थी। यह भी किंवदंती सुनने को मिलती है कि जब वे राग दीपक गाते थे तो उसकी गर्मी से दीपक स्वयं जल उठते थे। इसी तरह मेघ मल्हार गाने से झमाझम बारिश होने लगती थी। इससे ही यह स्पष्ट हो जाता है कि संगीत और गुनगुनाहट में असीम शक्ति है। इस शक्ति से मनुष्य तो क्या पृथ्वी और प्रकृति तक झूमने लगते हैं।

मनोचिकित्सक मानते हैं कि रागों में व्यक्ति के तन-मन के रोगों को दूर की जादुई शक्ति छिपी है। संगीत और गुनगुनाहट को चिकित्सा प्रणाली में शामिल कर रोगियों को ठीक किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि तोड़ी, भूपाली, अहीर भैरव राग सर्दी-जुकाम, सिरदर्द और उच्च रक्तचाप से राहत देते हैं। शिवरंजनी राग सुनने से याददाश्त तेज होती है और स्मृति लोप की समस्या दूर होती है। राग भैरवी सर्दी, कफ और दांत दर्द से राहत देता है। चंद्रकौंस राग हृदय रोग और मधुमेह के लिए उपचारदायक है। राग दरबारी तनाव दूर करता है। राग बिहाग और बहार गहरी मधुर नींद के लिए लाभदायक है। जब बच्चा छोटा होता है तो मां बच्चे को लोरी गाकर सुनाती है। लोरी गाते-गाते वह कई बार गुनगुनाती भी है। यह गुनगुनाना न केवल मां-बच्चे को मानसिक शांति प्रदान करता है, अपितु उनके आपसी बंधन को भी मजबूत करता है।

गायकों का मानना था कि गुनगुनाहट न केवल उनके संगीत को प्रबल करती है, अपितु उनके मानसिक तनाव को भी दूर करती है। सुप्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर ने एक साक्षात्कार में कहा था कि, 'मैं सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक मन ही मन कोई न कोई रचना गुनगुनाती रहती हूं। कभी किसी धुन को ठीक कर रही होती हूं, तो कभी किसी भाव को भीतर महसूस कर रही होती हूं। यह गुनगुनाना ही है जो मेरी आत्मा को स्थिर रखता है।'

गुनगुनाने से एकाग्रता और रचनात्मकता का विकास होता है। इसलिए कई बार वैज्ञानिक, डॉक्टर, विद्यार्थी पढ़ते हुए गुनगुनाते हैं। गुनगुनाने से व्यक्ति स्वयं के साथ जुड़ जाता है क्योंकि उस समय उसका पूरा ध्यान गुनगुनाने की ध्वनि पर होता है। योग में भ्रामरी प्राणायम का विशेष महत्व है क्योंकि इसमें ध्वनि और हम्मिंग यानी कि गुनगुनाने का विशेष महत्व है। यह ध्वनि और कंपन शरीर व मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालते हैं। ध्वनि कंपन से पीनियल ग्रंथि और हाइपोथैलेमस को शांति मिलती है। गुनगुनाने से व्यक्ति के स्वर तंत्रों को भी मजबूती मिलती है। इस प्रकार गुनगुनाना और राग सुनना अत्यंत लाभदायक औषधियां हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

कुछ जानी-अनजानी, कुछ कही-अनकही किस्से-कहानियां स्वतंत्रता दिवस के मौके पर शेयर की जाती है

विजय गर्ग

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर अनेक किस्से-कहानियां हम आपस में शेयर करते हैं। कुछ जानी-अनजानी, कुछ कही-अनकही। इस देश में अनेक रणबांकुरे हुए हैं जिन्होंने मातृभूमि पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। इसी देश में साधारण लोग भी ऐसे हुए हैं जिन्होंने देश के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। किसी ने तन से किसी ने मन और किसी ने धन से, जब भी जरूरत हुई अपनी सामर्थ्य के अनुसार देश के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। आज हम एक किले की बात करते हैं। जिस किले की रक्षा के लिए वहां की प्रजा ने अपने चांदी के गहने राजा को समर्पित कर दिए थे, ताकि लोहे की कमी झेल रहा राज्य चांदी के गोले बनाकर दुश्मन पर दाग सके। आज वही किला अपने अस्तित्व को बचाने के लिए प्रशासन की बाट जोह रहा है। असल में हम बात कर रहे हैं चुरु के किले की। वर्तमान में यह किला राजस्थान सरकार के स्वामित्व में है और किले के भीतर कोतवाली, अस्पताल व विद्यालय संचालित हैं।

अपनी स्वतंत्रता को बचाए रखने के लिए दुश्मन पर चांदी के गोले दागने के लिए प्रसिद्ध यह किला अवैध कब्जों व सरकारी उदासीनता का शिकार है और जीर्णोद्धार के अभाव में किले का परकोटा जगह जगह से क्षतिग्रस्त है। सबसे बड़ी बात कोतवाली से महज कुछ मीटर दूर इस किले के मुख्य द्वार एक किंवाड़ तक चोरी हो गया, आपको बता दें किले का यह किंवाड़ इतना भारी था कि इसे बिना क्रेन नहीं उठाया जा सकता। जाहिर है चोर दरवाजा ले जाने के लिए अपने साथ क्रेन मशीन व ट्रेक्टर जरूर लाये होंगे। किले की इस अवस्था व प्रशासन की उदासीनता को लेकर चुरु के नागरिक उद्वेलित हैं। यहां के जुनूनी युवा और बच्चे इस किले की ऐतिहासिक कहानी को शान से शेयर करते हैं। वे अपने यहां आने वाले मेहमानों को भी बताते हैं कि कैसे किले की कहानी सबको आकर्षित करती है। लेकिन इस घटना-दुर्घटना के कारण लोगों का मन खिन्न हुआ है। यहां के युवा, बच्चे और बुजुर्ग सभी इस प्रकरण से नाराज हैं।

हैरिटेज व ऐतिहासिक धरोहरों की महत्ता समझने वाले युवाओं से अपील है कि चुरु की इस ऐतिहासिक धरोहर को बचाने के लिए आगे आयें। चुरु के युवा स्थानीय प्रशासन व राजनेताओं पर दबाव बनायें ताकि वे जागे और इस ऐतिहासिक धरोहर का संरक्षण करने हेतु जीर्णोद्धार करावें। असल में बताया जाता है कि जब किले की आन-बान पर बात बनी तो यहां के लोगों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

हमारे सौर मंडल से परे जीवन की आशा की किरण

विजय गर्ग

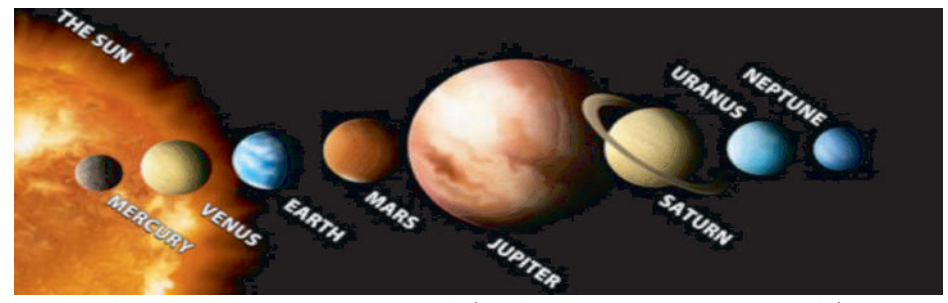

खगोलविदों ने 'सुपर-अर्थ' 35 प्रकाश-वर्ष दूर की खोज की, जिससे हमारे सौर मंडल से परे जीवन की आशा बढ़ गई दुबईः ब्रह्मांड के बारे में हमारे दृष्टिकोण को फिर से आकार देने वाली एक शानदार खोज में, खगोलविदों ने एल 98-59 के रूप में जाना जाने वाला एक छोटा, शांत सितारा चक्कर लगाने वाले पांच चट्टानी ग्रहों की उल्लेखनीय रूप से घनी प्रणाली को इंगित किया है। इस खोज को विशेष रूप से रोमांचकारी बनाता है, यह एक 'सुपर-अर्थ' की पुष्टि है जो आराम से स्टार के रहने योग्य क्षेत्र के भीतर स्थित है, एक ऐसा क्षेत्र जहां स्थितियां संभवतः तरल पानी के लिए अनुमति दे सकती हैं।

यह असाधारण ग्रह प्रणाली, पृथ्वी से मात्र 35 प्रकाश वर्ष, हमारे सौर मंडल से परे ग्रह निर्माण के रहस्यों और जीवन के लिए आवश्यक अवयवों को उजागर करने के लिए उत्सुक वैज्ञानिकों के लिए एक प्राकृतिक प्रयोगशाला के रूप में कार्य करती है। नासा के ट्रांजिटिंग एक्सोप्लैनेट सर्वे सैटेलाइट द्वारा तीन ग्रहों (एल 98-59 बी, सी, और डी) का प्रारंभिक पता लगाना संभव बनाया गया था, जो ग्रहों की परिक्रमा के कारण एक तारे की चमक में सूक्ष्म रूप से सूक्ष्म डिप्स का निरीक्षण करता है।

इसके अलावा गहराई से विश्लेषण, शक्तिशाली जमीन आधारित उपकरणों से उच्च परिशुद्धता टिप्पणियों के साथ टीईएसएस से डेटा का सावधानीपूर्वक संयोजन, एक चौथे ग्रह (एल 98-59 ई) की रोमांचक पुष्टि के लिए नेतृत्व किया और, सबसे विशेष रूप से, एक पांचवां ग्रह, एल 98-59 एफ। यह नव पुष्ट सुपर-अर्थ, हमारे अपने ग्रह के द्रव्यमान का लगभग तीन गुना होने का अनुमान है, अपने मेजबान तारे से समान मात्रा में ऊर्जा प्राप्त करता है जैसा कि पृथ्वी सूर्य से करती है, इसे उस क्षेत्र के भीतर मजबूती से रखती है जहां तरल पानी, एक आधारशिला जीवन जैसा कि हम जानते हैं, सैद्धांतिक रूप से मौजूद हो सकता है।

एल 98-59 प्रणाली ग्रहों की रचनाओं की एक आश्चर्यजनक विविधता दिखाती है। कम एल 98-59 बी से, जो पृथ्वी से छोटा है, एल 98-59 सी और डी की पेचीदा संभावनाओं के लिए ज्वारीय रूप से गर्म ज्वालामुखीय दुनिया जा रहा है या यहां तक कि विशाल महासागरों के पास भी है।

जीवन की उत्पत्ति के लिए खोज नासा एक्सोप्लैनेट अन्वेषण में सबसे आगे बना हुआ है, जिसमें टीईएसएस जैसे मिशन ऐसी खोजों के लिए मूलभूत डेटा प्रदान करते हैं। एजेंसी के शक्तिशाली जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप पहले से ही इन दूर की दुनिया के अनुवर्ती वायुमंडलीय अध्ययनों में लगे हुए हैं, जो उनके रासायनिक श्रृंगार और जीवन को परेशान करने की क्षमता के बारे में महत्वपूर्ण सुराग चाहते हैं। यह सहक्रियात्मक दृष्टिकोण, अंतरिक्ष-आधारित टिप्पणियों और अत्याधुनिक ग्राउंड-आधारित प्रौद्योगिकी दोनों का लाभ उठाते हुए, इन आकर्षक खगोलीय पिंडों की हमारी समझ का तेजी से विस्तार कर रहा है।

एल 98-59 प्रणाली अब टीआरऐपीपीआईएसटी-1 जैसी अन्य महत्वपूर्ण बहु-ग्रह खोजों की श्रेणी में शामिल हो गई है, क्योंकि लाल बौने सितारों के आसपास ग्रह निर्माण की जटिल प्रक्रियाओं को समझने के लिए मानवता की चल रही खोज में महत्वपूर्ण लक्ष्य हैं और अंततः, गहन प्रश्न का उत्तर देने के लिए कि क्या हम ब्रह्मांड में अकेले हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

भारत डॉक्टरों और नर्सों का निर्यात कर रहा है। देश को उनकी भी जरूरत है

विजय गर्ग

देशों में स्वास्थ्य कार्यबल की मांग और आपूर्ति एक कठिन समस्या है, अधिकांश देशों में पर्याप्त संख्या में डॉक्टरों और नर्सों की कमी है और 2030 तक 18 मिलियन स्वास्थ्य श्रमिकों की अनुमानित वैश्विक कमी है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता देशों में प्रवास करते हैं, प्रवाह आमतौर पर ग्लोबल साउथ के देशों से उत्तर में रहने वालों के लिए होता है। जिन देशों से स्वास्थ्य पेशेवर पलायन करते हैं, वे भी आंतरिक आपूर्ति की कमी का सामना करते हैं। उदाहरण के लिए, श्रीलंका व्यापक परित्याग का गवाह है, जिसे अन्य देशों के पेशेवरों को प्राप्त करके (आंशिक रूप से) संबोधित किया जाता है। अनुमानित 10-12 प्रतिशत विदेशी प्रशिक्षित डॉक्टर और नर्स उन देशों से आते हैं, जिन्हें स्थानीय स्वास्थ्य कर्मियों की कमी के लिए जाना जाता है। ओईसीडी डेटा अनुमान बताते हैं कि 2009 से 2019 के बीच, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, ब्रिटेन में 25 प्रतिशत से 32 प्रतिशत डॉक्टर और अमेरिका दक्षिण एशिया और अफ्रीका के मेडिकल ग्रेजुएट थे।

भारतीय डॉक्टर, नर्स और अन्य स्वास्थ्य पेशेवर दुनिया भर के देशों में प्रवास करते हैं - लगभग 75,000 भारतीय प्रशिक्षित डॉक्टर ओईसीडी देशों में काम करते हैं, और अनुमानित 640,000 भारतीय नर्स विदेश में काम करती हैं। फिलीपींस एक और उदाहरण है - देश नर्सों और अन्य स्वास्थ्य पेशेवरों के बड़े पैमाने पर निर्यात के लिए प्रसिद्ध है। 193,000 से अधिक फिलीपींस-प्रशिक्षित नर्स विदेश में काम करती हैं, जो दुनिया भर में सभी फिलिपिनो नर्सों का लगभग 85 प्रतिशत हिस्सा हैं।

अर्थशास्त्र और भूराजनीति पुश और पुल कारकों के संयोजन के माध्यम से इस तरह के प्रवास की सीमा और प्रकृति को प्रभावित करते हैं। सीमित कैरियर विकास और कम मजदूरी प्रमुख आर्थिक धक्का कारक हैं। स्रोत देश में राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष अक्सर राजनीतिक धक्का कारक होते हैं। व्यापार समझौते जो प्रवास को प्रोत्साहित करते हैं, स्वास्थ्य संकट जो स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को कुछ क्षेत्रों में खींचते हैं और अंतर्राष्ट्रीय भर्ती नीतियां सभी पुल कारक हैं, जो बदले में, स्रोत देशों में कमी में योगदान करते हैं। फिलीपींस और भारत जैसे देशों ने स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के निर्यात को प्रोत्साहित करने, उन्हें प्रेषण और आर्थिक लाभ के स्रोतों के रूप में देखने के लिए नीतियों को औपचारिक रूप दिया है। फिर भी, दोनों देशों में स्वास्थ्य पेशेवरों की भारी कमी है।

प्रेषण और कौशल विकास के रूप में संभावित लाभ के बावजूद, पहले से ही कमी का सामना कर रहे देशों में कार्यबल क्षमता की हानि लाभ को बढ़ाती है। इसलिए, एक संतुलित घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय नीति प्रतिक्रिया है जो व्यक्ति, राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणाली और वैश्विक इक्विटी की जरूरतों पर केंद्रित है।

राजनयिक लाभ के लिए क्रॉस-कंट्री माइग्रेशन का अक्सर लाभ उठाया जाता है। भारत, जिसे पहले से ही दुनिया की फार्मेसी के रूप में जाना जाता है, अंतरराष्ट्रीय भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए इस तरह के प्रवास का लाभ उठाता है, प्रेषण और निवेश के माध्यम से आर्थिक लाभ को बढ़ावा देता है, स्वास्थ्य क्षेत्रों में अपने वैश्विक प्रभाव को बढ़ाता है, और परिपत्र प्रवास और द्विपक्षीय सहयोग को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों के माध्यम से मस्तिष्क नाली की चुनौतियों का प्रबंधन करता है। इसने पड़ोसी और अफ्रीकी देशों में चिकित्सा पेशेवरों को तैनात करके कोविद महामारी के दौरान चिकित्सा कूटनीति को बढ़ाया। अब जरूरत है कि अधिक व्यापक बातचीत करने पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाए - और लागू करने योग्य - स्रोत और गंतव्य देशों के बीच द्विपक्षीय समझौते, जिसमें संभावित रूप से मुआवजा तंत्र, चिकित्सा शिक्षा में लक्षित निवेश, स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे, या प्रौद्योगिकी हस्तांतरण शामिल हो सकते हैं, कुशल श्रमिकों के नुकसान की भरपाई करने के लिए। डब्ल्यूएचओ कोड इस तरह के समझौतों के पुनर्निर्माण में एक प्रारंभिक बिंदु है।

जन्म दर में गिरावट के साथ बढ़ती आबादी बढ़ती मांगों और विकसित देशों में स्वास्थ्य पेशेवरों की तीव्र कमी का कारण बन रही है। भारत और अन्य देश स्वास्थ्य पेशेवरों की आपूर्ति करने की क्षमता रखते हैं। भारत बेहतर संस्थागत तंत्रों के माध्यम से लाभ को अधिकतम कर सकता है, जैसे कि कार्यबल गतिशीलता का प्रबंधन करने के लिए एक केंद्रीकृत एजेंसी की स्थापना। विदेशी रोजगार के समन्वय के लिए एजेंसियों की स्थापना के साथ केरल का अनुभव, शिकायतों का समाधान, और वापसी करने वालों का समर्थन राष्ट्रीय दृष्टिकोण को सूचित कर सकता है। तो क्या फिलीपींस के प्रवासी श्रमिकों के विभाग के अनुभव हो सकते हैं।

(साजिश नहीं, सच्चाई है)
बीएसएनएल के बाद अब सरकारी स्कूलों की बारी

डॉ. प्रियंका सौरभ

जब भी कोई सरकार राष्ट्रहित की बातें करती है, तो नागरिकों को यह समझना चाहिए कि इन कथित राष्ट्रहितों से वास्तव में लाभ किसका हो रहा है। आज का भारत एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ जनसेवाओं को योजनाबद्ध ढंग से निजी हाथों में सौंपा जा रहा है। जिसे हम सुधार कह रहे हैं, वह दरअसल एक सुनियोजित विनिवेश है — जिसमें जनता के अधिकारों को धीरे-धीरे छीनकर बाजार की वस्तुओं में तब्दील किया जा रहा है। इस पूरी प्रक्रिया का सबसे बड़ा उदाहरण भारत संचार निगम लिमिटेड यानी बीएसएनएल है, और अब यही प्रयोग भारत के सरकारी स्कूलों पर किया जा रहा है।

बीएसएनएल कभी देश के कोने-कोने तक पहुंचने वाली संचार प्रणाली थी। पहाड़ों, सीमावर्ती क्षेत्रों और ग्रामीण इलाकों तक जहाँ कोई निजी कंपनी नहीं पहुंच पाती थी, वहाँ भी बीएसएनएल की सेवाएं थीं। लेकिन सरकारों ने धीरे-धीरे उसकी गति को रोकना शुरू किया। नई तकनीकें लाने से उसे रोका गया, 4जी सेवा देने में टालमटोल की गई, कर्मचारियों की संख्या घटाई गई, और वित्तीय सहायता सीमित कर दी गई। नतीजा यह हुआ कि देश की एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक कंपनी धीरे-धीरे कमजोर होती गई। इसके समानांतर जिओ जैसी निजी कंपनियों को हर स्तर पर प्रोत्साहन दिया गया। उन्हें स्पेक्ट्रम भी सस्ते में मिला, नियमों में ढील भी दी गई और प्रशासनिक मदद भी। अंततः बीएसएनएल को कमजोर कर दिया गया और निजी कंपनियां बाजार पर छा गईं।

यही परिदृश्य अब शिक्षा के क्षेत्र में दोहराया जा रहा है। सरकारी स्कूलों को योजनाबद्ध तरीके से बदनाम किया जा रहा है। कहा जा रहा है कि वहाँ पढ़ाई का स्तर खराब है, छात्र कम हैं, परिणाम अच्छे नहीं आते। लेकिन कोई यह नहीं पूछता कि इन स्कूलों में पढ़ाने वाले शिक्षकों की संख्या कितनी है, कितने वर्षों से स्थायी नियुक्तियाँ रुकी हुई हैं, स्कूल भवन कितने जर्जर हैं, पुस्तकालय और प्रयोगशालाएँ कहाँ हैं। बच्चों को स्कूल तक पहुँचाने के लिए परिवहन की क्या व्यवस्था है? यह सब कुछ जानबूझकर उपेक्षित किया गया है, ताकि एक छवि बनाई जा सके कि सरकारी स्कूल असफल हैं।

जब सरकारी स्कूल कमजोर दिखेंगे तो समाज का भरोसा स्वतः कम होगा। फिर अभिभावक मजबूरीवश अपने बच्चों को निजी स्कूलों में भेजने लगेंगे, भले ही उनकी आर्थिक स्थिति इसकी अनुमति न देती हो। यह एक बहुत ही गहरी और खतरनाक रणनीति है। पहले सेवाओं को कमजोर करो, फिर जनता को विकल्पहीन बनाओ, और अंततः निजी सेवाओं की ओर धकेलो।

आज जितने भी बड़े निजी स्कूल हैं, उनके पीछे कोई न कोई राजनीतिक या प्रशासनिक व्यक्ति खड़ा है। किसी मंत्री की पत्नी का ट्रस्ट, किसी पूर्व सांसद का चैरिटेबल फाउंडेशन, किसी नौकरशाह का एनजीओ — यही वो नाम हैं जो प्राइवेट स्कूलों की चकाचौंध के पीछे हैं। ऐसे में जब शिक्षा नीति बनाई जाती है, तो लाभ इन्हीं को पहुँचता है। सरकार खुद नीति बनाती है, और उन्हीं नीतियों से उनके अपने स्कूलों को फायदा होता है।

अब स्थिति यह हो गई है कि गरीब और मध्यम वर्गीय परिवार भी भारी शुल्क भरकर अपने बच्चों को निजी स्कूलों में पढ़ा रहे हैं। स्कूलों में प्रवेश शुल्क, मासिक शुल्क, वार्षिक शुल्क, यूनिफॉर्म, किताबें, स्मार्ट क्लास, ट्रांसपोर्ट — हर चीज़ पर पैसा लिया जाता है और शिक्षा को उत्पाद बनाकर बेचा जाता है। यदि कोई माता-पिता फीस देने में देरी करें तो बच्चे को अपमानित किया जाता है या स्कूल से निकालने की धमकी दी जाती है। क्या यही शिक्षा का उद्देश्य है?

इसी बीच सरकारी स्कूलों को 'मर्ज' करने की नीति लाई जाती है। जहाँ बच्चों की संख्या कम हो, उन्हें पास के स्कूल में मिलाने का सुझाव आता है। लेकिन यह नहीं देखा जाता कि क्या दूरी ज़्यादा है? क्या वहाँ पर्याप्त शिक्षक हैं? क्या छात्राओं की सुरक्षा का ध्यान रखा गया है? नीतियाँ केवल आंकड़ों में अच्छी दिखती हैं, ज़मीन पर नहीं।

आज शिक्षा का अधिकार कानून भी केवल एक कागज़ी दस्तावेज़ बन कर रह गया है। विद्यालय प्रबंधन समितियाँ केवल नाम की हैं। सरकारें अपने बजट में शिक्षा को प्राथमिकता नहीं देतीं। खर्चों में कटौती की जाती है, शिक्षकों की भर्ती वर्षों तक नहीं होती, और जो शिक्षक हैं, उन्हें गैर-शैक्षणिक कार्यों में लगा दिया जाता है। कभी चुनाव की ड्यूटी, कभी जनगणना, कभी टीकाकरण अभियान — शिक्षकों से हर काम करवाया जाता है सिवाय पढ़ाने के।

इन सबके बीच अंग्रेज़ी भाषा को इस तरह से प्रस्तुत किया गया है जैसे बिना अंग्रेज़ी बोले जीवन असंभव है। निजी स्कूलों ने अंग्रेज़ी माध्यम को श्रेष्ठता का पर्याय बना दिया है। बच्चे यदि अंग्रेज़ी में दो वाक्य बोल लें तो उन्हें स्मार्ट और सफल मान लिया जाता है, भले ही उनके पास विषय की समझ न हो। वहीं सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाला बच्चा चाहे जितना बुद्धिमान हो, पर यदि वह हिंदी में बात करता है, तो उसे पिछड़ा समझा जाता है। यह मानसिक गुलामी की पराकाष्ठा है।

सरकारी स्कूल केवल भवन नहीं हैं, ये समाज के सबसे पिछड़े और वंचित वर्गों के लिए शिक्षा की आशा हैं। ये बच्चे जिनके माता-पिता खेतों में मजदूरी करते हैं, रिक्शा चलाते हैं या घरेलू कामगार हैं, उनके लिए शिक्षा का एकमात्र जरिया सरकारी स्कूल ही हैं। यदि इन स्कूलों को खत्म किया गया, तो यह शिक्षा का नहीं, सामाजिक न्याय का अपमान होगा।

यहाँ सवाल केवल सुविधाओं का नहीं, बल्कि नीयत का है। सरकार चाहे तो सरकारी स्कूलों को मॉडल स्कूल बना सकती है। शिक्षक, पुस्तकालय, लैब, स्मार्ट क्लास, खेल सामग्री और परिवहन जैसी सुविधाएँ देकर इन्हें निजी स्कूलों से बेहतर बनाया जा सकता है। लेकिन ऐसा करना सत्ताधारी लोगों के निजी स्वार्थों के खिलाफ जाएगा, इसलिए यह नहीं होता।

समस्या यह है कि हमने शिक्षा को मुनाफे का साधन मान लिया है। अब यह अधिकार नहीं, सेवा हो गई है — और सेवा भी ऐसी, जो केवल पैसे वालों के लिए उपलब्ध है। यह समाज को दो भागों में बाँट रही है — एक वो जो अंग्रेज़ी में महंगी शिक्षा लेकर शहरी नौकरी करेगा, और दूसरा वो जो टूटी छतों के नीचे हिंदी में पढ़ाई कर गाँव में ही मजदूरी करेगा।

अब वक्त आ गया है कि हम चुप न रहें। यदि हमने अभी आवाज़ नहीं उठाई, तो आने वाली पीढ़ियाँ केवल एक वर्ग विशेष के हाथों की कठपुतली बनकर रह जाएँगी। हमें मांग करनी होगी कि सरकारी स्कूलों को बंद करने के बजाय उन्हें सशक्त किया जाए। हर गाँव, हर कस्बे में शिक्षा के स्तंभ को मजबूत किया जाए। शिक्षकों की भर्ती समय पर हो, उन्हें केवल पढ़ाने का काम दिया जाए और विद्यालयों को संसाधन संपन्न बनाया जाए।

हमें यह समझना होगा कि शिक्षा का निजीकरण केवल आर्थिक नहीं, वैचारिक गुलामी का रास्ता है। जब एक वर्ग को सोचने, सवाल करने, और अपने अधिकार पहचानने की शिक्षा नहीं मिलेगी, तब लोकतंत्र केवल वोट की मशीन बनकर रह जाएगा।

बीएसएनएल के साथ जो हुआ वह एक आर्थिक खेल था, लेकिन सरकारी स्कूलों को समाप्त करना एक सामाजिक और वैचारिक अपराध होगा। यदि हम चाहते हैं कि देश की अगली पीढ़ी स्वतंत्र, सशक्त और समतामूलक सोच रखे, तो हमें आज सरकारी शिक्षा व्यवस्था को बचाना ही होगा।

स्मरण: प्रेमचंद जयंती : साहित्य के शाश्वत 'लाइटहाउस' प्रेमचंद : डॉ० घनश्याम 'बादल'

आज भी हिन्दी साहित्य प्रेमचंद बिना अधूरा है । प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के ऐसे कालजयी रचनाकार हैं जिन्होने आदर्शवादी और जीवन को अंदर तक झकझोरता वास्तविकता के बहुत निकट का साहित्य दिया है । जहां उनकी कहानियों में कथानक वास्तविकता के धरातल के इतने पास होता था कि ऐसा लगता था जैसे वह कहानी हमारे साथ ही घटित हो रही हो वही उपन्यासों में ऐसी रोचकता भरने में वे कामयाब रहे कि उनके उपन्यासों को एक बार पढ़ना शुरू करके बीच में छोड़ना बहुत मुश्किल है।

प्रेमचंद वह कथाकार हैं जिनका हर पात्र ऐसा है कि जैसे हमारे बीच का कोई जीवंत आदमी पन्नों पर उतर आया हो । होरी हो या गोबर, धनिया हो या भाई साहब, शतरंज के खिलाड़ी के नवाब या नमक के दरोगा के वंशीधर और अलोपीदीन अथवा ईदगाह का बालक हमीद सब पात्र केवल पुस्तक के पन्नों तक नहीं रहते अपितु असली रंग बिखेरते हुए रोजमर्रा के जीवन में कहीं न कहीं दिख जाते हैं । मंत्र के डॉक्टर चड्ढा अमीरी और गर्व के प्रतीक हैं तो गंवार बूढ़ा उदारता एवं परोपकार का जीता जागता नमूना है । पंच परमेश्वर की बूढ़ी काकी यदि अपनों से ही त्रस्त है तो जुम्मन और अलगू चौधरी मित्रता के साथ साथ अन्याय के भी प्रतीक पात्र हैं ऐसे जीवंत पात्र या तो रूसी कथाकार गोर्की गढ़ पाए या फिर हिंदुस्तान के प्रेमचंद । शायद इसीलिए प्रेमचंद को भारत का गोर्की भी कहा जाता है ।

प्रेमचंद को सार्वकालिक महान रूसी कथाकार लियो टॉलस्टाय व मैक्सिम गोर्की का मिश्रित अवतार माना जाता है । मुंशी प्रेमचंद वस्तुतः भारतीय हिन्दी साहित्य के एक ऐसे कालजयी रचनाकार हैं कि उन्हे एक तरफ करने पर हिंदुस्तानी साहित्य आधा रह जाता है ।

प्रेमचंद ऐसे 'डार्क पीरियड़' में पैदा हुए जिसमें गुलामी का दंश गहरे तक डस रहा था, आम भारतीय सुख की ज़िंदगी जीने की कल्पना नहीं कर सकते थे । अंग्रेजी शासन से भारतीय बुरी तरह त्रस्त थे । गरीबी व शोषण बहुत सामान्य बात थी, वर्गभेद व छुआ-छूत से त्रस्त भारतीय समाज शोषण का एक प्रतीक था और भारतीयों को उच्च शिक्षा से दूर रखने व उच्च पदों तक न पंहुचने देने का पूरा इंतजाम अंग्रेजी शासन ने कर रखा था ।

गरीबी प्रेमचंद से जोंक की तरह ता-उम्र

चिपकी रही । लिखने के प्रति जुनून के चलते प्रेमचंद ने पद से इस्तीफा दे जीविकोपार्जन के लिए प्रिटिंग प्रेस भी खोली पर पैसा उनके हाथ कभी नहीं लगा। मगर जब एक बार कलम का डंका बजने लगा था तो वें कथा व उपन्यास के ऐसे 'लाइटहाऊस' बने जो आज तक रोशन कर रहा है ।

प्रेमचंद के समय के लेखनकाल की यह एक विडम्बना रही कि उस कालखंड के अधिकांश रचनाकार फ़ाकाक़शी के शिकार रहे । वैसे सच यह भी है कि निर्धनता, भूख व मज़बूरी ने उन्हे जीवन के कड़वे सच को बहुत नज़दीक से देखने, समझने का मौका दिया जो उनके लेखन में उभर कर आया है और शायद इन्ही मज़बूरियों ने उन्हे व्यापक दृष्टि भी दी ।

प्रेमचंद के साहित्य को परिस्थितियों की देन भी कह सकते हैं । उनके सहित्य में जहां अपने समय की विसंगतियां, विद्रूपतायें, सामाजिक असमानता, अत्याचार, विवशता, सब कुछ सह लेने की कायरता समाहित है वहीं अमीर वर्ग की अय्याशी, असंवेदनशीलता, चाटुकारिता, स्वार्थपरता व अहंकार का भाव जिस सहजता से आया है वह अन्यत्र दुर्लभ है ।

प्रेमचंद ने हिन्दी साहित्य को अकेले दम इतना कुछ दिया है कि बाद की कई पीढ़ियां भी उतना नहीं दे पाई । अपनी लगभग हर कहानी में प्रेमचंद ने समाज को एक न एक नैतिक पाठ जरूर पढ़ाया है । साठोत्तरी कहानी के तो प्रेमचंद बादशाह हैं, उनकी कहानियों में कथ्य, शिल्प, संदेश व ताने बाने का अद्भुत समन्वय है । खड़ी बोली हिन्दी के साथ साथ हिन्दुस्तानी व उर्दू में भी में प्रेमचंद ने कथा, कहानी, नाटक व उपन्यासआदि सृजन के मानक रचे हैं ।

लमही का यह धरतीपुत्र अपने कर्म व आचरण में सदैव ही विनम्र व यथार्थवादी रहा । पर, अपने पीछे एक महाप्रश्न भी छोड़ गया कि अखिर वें कौन से कारण व कारक हैं जिनके चलते भारतीय लेखकों को अपने जीते जी अभावों से जूझना ही होता है ।

आवाज़ के अनमोल दो सितारे: रफ़ी और किशोर दा हमारे

विवेक रंजन श्रीवास्तव

अमर गायक मोहम्मद रफ़ी और किशोर कुमार, दो नाम, दो शैलियाँ, दोनों ही स्वर के साक्षात देवता । जब कभी फिल्मी गीतों में स्वर की कोमलता, भक्ति की गहराई और आवाज के दर्द की पराकाष्ठा की चर्चा होती है, वहाँ महान गायक मोहम्मद रफ़ी साहब की आवाज़ स्वत: ही कानों में गूंज उठती है। एल पी, कैसेट, सीडी, डी वी डी से पेन ड्राईव का डीजिटल सफर बदलता रहेगा पर रफी साहब और किशोर दा हर माध्यम में अपनी मर्म स्पर्शी आवाज के कारण ये दोनो महान गायक अमर बने रहेंगे । अच्छे से अच्छे गीतकार के शब्द तब तक बेमानी होते हैं, जब तक उन्हें कोई संगीतकार मर्म स्पर्शी संगीत नही दे देता और हर संगीत तब तक बेमानी रह जाता है जब तक कोई गायक उन्हें अपने गायन से श्रोता के कानो से होते हुये उसके हृदय में नही उतार देता . फिल्म बैजू बावरा का एक भजन है मन तड़पत हरि दर्शन को आज, इस अमर गीत के संगीतकार नौशाद और गीतकार शकील बदायूंनी हैं, इस गीत के गायक मो रफी हैं । रफी साहब की बोलचाल की भाषा पंजाबी और उर्दू थी, अत: इस भजन के तत्सम शब्दो का सही उच्चारण वे सही सही नही कर पा रहे थे . नौशाद साहब ने बनारस से संस्कृत के एक विद्वान को बुलाया ताकि उच्चारण शुद्ध हो. रफी साहब ने समर्पित होकर पूरी तन्मयता से हर शब्द को अपने जेहन में उतर जाने तक रियाज किया और अंततोगत्वा यह भजन ऐसा तैयार हुआ कि आज भी मंदिरों में उसके सुर गूंजते हैं और सीधे लोगो के हृदय को स्पंदित कर देते हैं . अपने संगीतज्ञ कलाकारो के चलते यह भजन उद्घोष करता है कि संगीत सारी कट्टर पंथी सोच और संकीर्णता से परे खुद एक इबादत है, एक पूजा है ।

मोहम्मद रफ़ी साहब का जन्म २४ दिसंबर 1924 को अमृतसर जिले के कोटला गांव में हुआ था .उन्होने अपनी गायकी की बारीकियो से हिन्दी सिनेमा के श्रेष्ठतम पार्श्व गायकों में अपना स्थान युगो युगो के लिये सुरक्षित कर लिया . उनके समकालीन गायकों के बीच रफी साहब आवाज की मधुरता से विशिष्ट पहचान बना सके . उन्हें शहंशाह-ए-तरन्नुम भी कहा जाने लगा . 1940 के दशक में रफी मात्र अठारह बीस बरस के थे, पर तब से ही वे व्यवसायिक गायक के रूप में पहचान बनाने लगे थे, 1980 में 31 जुलाई को वे हमें छोड़ गये पर इन लगभग 40 वर्षो की गायकी के सफर में उन्होने २६,000 से अधिक गाने गाए. जिनमें मुख्यत: हिन्दी फिल्मी गानों के अतिरिक्त ग़ज़ल, मेरे मन में हैं राम मेरे तन में हैं राम, सुख के सब साथी दुख में न कोई, ईश्वर अल्लाह तेरो नाम, बड़ी देर भई नंदलाला जैसे भजन, सूफी, सुनो सुनो ऐ दुनिया वालों बापू की ये अमर कहानी..जैसे देशभक्ति गीत, नन्हें मुन्ने बच्चे तेरी मुठ्ठी में क्या है, जैसे बाल गीत, क़व्वाली तथा अन्य भाषाओं में गाए गाने भी शामिल हैं. उन्होने गुरु दत्त, दिलीप कुमार, देव आनंद, भारत भूषण, जॉनी वॉकर, जॉय मुखर्जी, शम्मी कपूर, राजेन्द्र कुमार, राजेश खन्ना, अमिताभ बच्चन, धर्मेन्द्र, जीतेन्द्र तथा ऋषि कपूर के अलावे स्वयं गायक अभिनेता किशोर कुमार के लिये भी फिल्मी पर्दे पर अपनी रोमांचक आवाज दी .

कभी कभी किस तरह छोटी सी घटना जीवन में बड़ा मोड़ ले आती है यह मोहम्मद रफ़ी के पहले स्टेज प्रोग्राम से समझ आता है . उनका जन्म अमृतसर, के पास कोटला सुल्तान सिंह में हुआ था। उनके बचपन में ही उनका परिवार लाहौर से अमृतसर आ गया. जब रफी मात्र सात साल के थे तो वे अपने बड़े भाई की नाई की दुकान में बैठा करते थे . उधर से रोज गुज़रने वाला एक फकीर मधुर स्वर में गाता हुआ निकलता था . नन्हे रफी उस फकीर का पीछा किया करते।

फवाहों से निपटने के लिए हों ठोस रणनीतियां !

मनसा देवी में भगदड़ में आठ लोगों की मौत हो गई और 45 लोग घायल हो गए, यह बहुत ही दुखद है। जानकारी के अनुसार, पैदल मार्ग पर बिजली का तार टूटने के बाद करंट फैलने की अफवाह से हादसा हुआ ।यह पहली बार नहीं है, जब भगदड़ से हादसा हुआ है, इससे पहले भी अनेक हादसे हमारे देश में हो चुके हैं। दरअसल, हमारे यहां भीड़ प्रबंधन के लिए कोई ठोस व पुख्ता योजनाएं नहीं बनाई जातीं हैं और न ही भीड़ प्रबंधन पर ज्यादा ध्यान ही दिया जाता है। लापरवाही, बदइंतजामी और जागरूकता की कमी के कारण अक्सर ऐसे हादसे घटित हो जाते हैं। जानकारी के अनुसार मनसा देवी में भीड़ प्रबंधन सुधारने की फाइल ही लापता बताई जा रही है, यह बहुत बड़ी बात है। आज सीसीटीवी निगरानी प्रणाली से, दिशा सांकेतिक बोर्ड, पैदल मार्गों पर आपातकालीन निकासी योजना तथा स्थानीय प्रशासनिक समन्वय को प्रभावी बनाकर ऐसे हादसे घटित होने से रोके जा सकते हैं। वास्तव में, सार्वजनिक स्थानों पर विशेषकर धार्मिक स्थलों पर भीड़ के लिए क्षमता तय होनी चाहिए और अफवाहों को रोकने के लिए साउंड सिस्टम बनाया जाना चाहिए। सभी स्थानों की रियल टाइम मोनिटरिंग की भी जरूरत महत्ती है ।मनसा देवी हादसे के बाद आम आदमी यह सोचने पर विवश हो गया हैं कि आखिर धार्मिक स्थलों पर इस तरह की भगदड़ बार-बार क्यों मचती है ? सवाल यह भी उठता है कि आखिर भगदड़ के दौरान होने वाली इन मौतों के लिए किसे जिम्मेदार माना जाए ? यक्ष प्रश्न यह भी है कि आखिर प्रशासन, पुलिस अधिकारी, व्यवस्थापक पूर्व में हुई घटनाओं से सबक क्यों नहीं लेते ? पाठकों को बताता चलूं कि इसी साल कर्नाटक के बेंगलुरु में आरसीबी की विक्ट्री परेड के दौरान भगदड़ मच गई थी। बेंगलुरु में मची इस भगदड़ का सबसे बड़े कारण ओवरक्राउडिंग व संवाद की कमी रहे और 11 लोगों की मौत हुई। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में महाकुंभ उत्सव के दौरान भी मौनी अमावस्या की रात भगदड़ मची और जानकारी के अनुसार इस हादसे में 30 लोगों की दर्दनाक मौत हुई और 60 से ज्यादा लोग घायल हुए। इतना ही नहीं, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर महाकुंभ के दौरान भारी भीड़ की वजह से भगदड़ मची थी और इसमें 18 लोगों की मौत हुई थी। दरअसल, ट्रेन के प्लेटफॉर्म नंबर को लेकर कन्फ्यूजन हुआ और भगदड़ मच गई। इतना ही नहीं, इसी साल 8 जनवरी को तिरुपति मंदिर में भी भगदड़ मची और इस हादसे में 6 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। पिछले साल हुआ हाथरस हादसा भी लोगों को याद होगा, जब भोले बाबा के पैर की धूल छूने के लिए भक्तों में ऐसी होड़ मची लोग एक दूसरे के ऊपर गिर गए थे। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि बेंगलुरु में आरसीबी के इवेंट में हुए हादसे के बाद कर्नाटक सरकार क्राउड कंट्रोल(भीड़ नियंत्रण) पर एक बिल लेकर आई है, जिसमें जिम्मेदारियां तय की गई हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि ऐसे कानून की आज हर जगह जरूरत है, विशेष कर भीड़भाड़ वाले स्थलों पर। साथ ही, ऐसे हादसों से बचने के लिए आयोजकों, पुलिस-प्रशासन और जनता को समन्वय में काम करना होगा। वास्तव में, आज बड़े पैमाने पर जन-जागरूकता की जरूरत है। इतना ही नहीं, अफवाहों से निपटने के लिए हमारे पास ठोस रणनीतियां होनी चाहिए। प्रशासन और प्रबंधन से जुड़े लोगों को गहन व अच्छा प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए। सार्वजनिक स्थानों पर चिकित्सा सुविधाएं भी सुनिश्चित की जानी चाहिए ।इसके अलावा प्रशासन को यह भी चाहिए कि वह सभी प्रमुख धार्मिक स्थलों पर सुरक्षा ऑडिट और आपदा प्रबंधन की योजनाओं का पुनर्मूल्यांकन कराए। बहरहाल, यह कह सकते हैं कि बदइंतजामी के कारण इस तरह की घटनाएं हो रही हैं। इससे बचने के लिए सतर्कता बहुत ही जरूरी है। सर्तकता ही वास्तव में सबसे बड़ा बचाव है।

सुनील कुमार महला,
टिप्पणीकार, पिथौरागढ़,
उत्तराखंड।

सूचना के शोर में दबती पुस्तकालयों की साँसें

[ज्ञान और साहित्य की दुनिया से दूर होती नई पीढ़ी]

एक समय था जब किताबें साँस लेती थीं, जब उनके पन्नों की सरसराहट में जीवन की धड़कन सुनाई देती थी। पुस्तकालयों की खामोशी में न जाने कितने सपने जन्म लेते थे, कितने विचार पंख लगाकर उड़ान भरते थे। वह दौर था जब किताबें सिर्फ कागज़ का ढेर नहीं, बल्कि आत्मा की खुराक थीं। लेकिन आज, जब उंगलियाँ स्क्रीन पर नाच रही हैं और आँखें डिजिटल चमक में डूबी हैं, किताबें चुपके-चुपके एक कोने में सिमट रही हैं। उनकी आवाज़ अब धीमी पड़ चुकी है, और उनके साथ-साथ हमारी संवेदनाएँ, हमारी सोच, और हमारी मानवता भी कहीं खोती जा रही है। यह सिर्फ पुस्तकालयों का दर्द नहीं, यह उस सभ्यता का दर्द है जो किताबों की गोद में पली थी और अब डिजिटल दुनिया की आँधी में बिखर रही है।

किताबें कभी महज वस्तु नहीं थीं। वे समय की सीमाओं को तोड़कर हमें अनंत यात्राओं पर ले जाती थीं। एक किताब खोलते ही आप रूस के बर्फीले मैदानों में दोस्तोयेव्स्की के किरदारों के दुख-दर्द में डूब जाते, तो दूसरी किताब आपको प्रेमचंद की कालजयी कहानियों के ज़रिए भारत के गाँवों की मिट्टी की सोंधी गंध तक ले जाती। किताबें हमें सिर्फ जानकारी नहीं देती थीं, वे हमें इंसान बनाती थीं। वे हमें सिखाती थीं कि हर दर्द को समझना है, हर खुशी को बाँटना है, और हर सवाल का जवाब खोजने की कोशिश करनी है। लेकिन आज की पीढ़ी के लिए किताबें एक पुरानी याद बनकर रह गई हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में 18-24 आयु वर्ग के 70% से अधिक युवा किताबों के बजाय सोशल मीडिया और ऑनलाइन कंटेंट को प्राथमिकता देते हैं। यह आँकड़ा सिर्फ एक संख्या नहीं, बल्कि उस बदलते परिदृश्य की कहानी है जहाँ किताबें अब प्रासंगिक नहीं मानी जातीं।

पुस्तकालय, जो कभी ज्ञान के मंदिर हुआ करते थे, अब वीरान पड़े हैं। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी जैसे संस्थानों, जो कभी किताबों के प्रेमियों का तीर्थस्थल थे, में अब आगंतुकों की संख्या लगातार घट रही है। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में सार्वजनिक पुस्तकालयों की संख्या पिछले दो दशकों में 20% तक कम हुई है, और जो बचे हैं, उनमें से कई रखरखाव और संसाधनों की कमी से जूझ रहे हैं। ये पुस्तकालय अब केवल किताबों का भंडार नहीं, बल्कि उपेक्षा और उदासीनता का प्रतीक बन गए हैं। वहाँ की दीवारों पर अब धूल की परतें हैं, और शेल्फों पर रखी किताबें किसी के स्पर्श की प्रतीक्षा में पीली पड़ रही हैं।

नई पीढ़ी को दोष देना आसान है, लेकिन सवाल यह है कि क्या हमने उन्हें किताबों की दुनिया से जोड़ने की कोशिश की? आज का बच्चा जन्म लेते ही टैबलेट और स्मार्टफोन की चमक में खो जाता है। नेशनल सैंपल सर्वे (2022) के अनुसार, भारत में 10-18 आयु वर्ग के 65% बच्चे प्रतिदिन 3 घंटे से अधिक समय स्क्रीन पर बिताते हैं। कहानियाँ अब दादी-नानी की आवाज़ में नहीं, बल्कि यूट्यूब के एनिमेशन में सुनाई जाती हैं। शिक्षक, जो कभी किताबों के प्रति प्रेम जगाते थे, अब ऑनलाइन नोट्स और पीडीएफ लिंक भेजने में व्यस्त हैं। और अभिभावक? वे भी अपने बच्चों के साथ स्क्रीन टाइम में हिस्सेदार बन जाते हैं। इस दौड़ में किताबें कहीं पीछे छूट गई हैं।

किताबों का महत्व सिर्फ ज्ञान तक सीमित नहीं है। वे हमें संवेदनशील बनाती हैं, हमें दूसरों के दुख-दर्द से जोड़ती हैं। जब कोई बच्चा 'टू किल ए मॉकिंगबर्ड' पढ़ता है, तो वह नस्लवाद और अन्याय के खिलाफ़ आवाज़ उठाना सीखता है। जब वह 'मालगुड़ी डेज़' की सैर करता है, तो वह छोटे शहरों की मासूमियत और मानवीय रिश्तों की गर्माहट को महसूस करता है। ये अनुभव सिर्फ सूचना नहीं, बल्कि जीवन को समझने का तरीका हैं। लेकिन आज की दुनिया में, जहाँ हर सवाल का जवाब गूगल पर मिल जाता है, किताबों की गहराई को समझने का धैर्य ही नहीं बचा। एक अध्ययन के अनुसार, डिजिटल युग में लोगों का ध्यान केंद्रित करने की अवधि 2000 में 12 सेकंड से घटकर 2023 में मात्र 8 सेकंड रह गई है। ऐसे में 300 पन्नों की किताब पढ़ना किसी चुनौती से कम नहीं।

किताबें हमें बिना शर्त प्रेम करती हैं। वे हमारी कमज़ोरियों, हमारी जिज्ञासाओं, और हमारे सवालों को बिना आलोचना किए स्वीकार करती हैं। बदले में वे सिर्फ़ हमारा समय माँगती हैं — कुछ पल, कुछ पन्ने, और कुछ विचार। लेकिन हमारी प्राथमिकताएँ बदल चुकी हैं। हम इंस्टाग्राम रील्स में खोए रहते हैं, जहाँ 15 सेकंड की कहानी हमें संतुष्ट कर देती है, लेकिन एक उपन्यास की गहराई हमें बोर करती है। यह क्षणिक संतुष्टि हमें किताबों से दूर ले जा रही है, और इसके साथ ही हम अपनी कल्पनाशीलता, संवेदनशीलता, और गहरे चिंतन की क्षमता खो रहे हैं।

पुस्तकालय सिर्फ किताबों का ढेर नहीं, बल्कि मानव इतिहास का जीवंत दस्तावेज हैं। वे उन विचारों का संग्रह हैं, जिन्होंने सभ्यताओं को आकार दिया। लेकिन जब ये पुस्तकालय वीरान हो रहे हैं, तो हम सिर्फ किताबें नहीं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक विरासत को भी खो रहे हैं। यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार, विश्व भर में पुस्तकालयों का उपयोग 1990 के दशक की तुलना में 40% तक कम हुआ है। यह आँकड़ा हमें सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम एक ऐसी दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ विचार सिर्फ ट्वीट्स और स्टोरीज़ तक सिमटकर रह जाएँगे?

हमें यह तय करना होगा कि हम अपनी अगली पीढ़ी को क्या देना चाहते हैं — एक ऐसी दुनिया जहाँ जानकारी तो है, लेकिन समझ नहीं; सूचना तो है, लेकिन संवेदना नहीं। किताबें हमें वह समझ देती हैं जो कोई एल्गोरिदम नहीं दे सकता। वे हमें वह गहराई देती हैं जो कोई सर्च इंजन नहीं दे सकता। लेकिन इसके लिए हमें पहल करनी होगी। स्कूलों में पुस्तकालयों को फिर से जीवंत करना होगा। शिक्षकों को बच्चों में किताबों के प्रति प्रेम जगाना होगा। अभिभावकों को अपने बच्चों के साथ किताबें पढ़ने की आदत डालनी होगी। सामुदायिक स्तर पर पुस्तक चर्चाएँ, साहित्यिक मंच, और रीडिंग क्लब्स शुरू करने होंगे।

भारत में कुछ प्रयास दिखाई दे रहे हैं। जैसे, पुणे की 'बुकवर्म लाइब्रेरी' और दिल्ली की 'कम्युनिटी लाइब्रेरी प्रोजेक्ट' जैसी पहलें बच्चों और युवाओं को किताबों से जोड़ रही हैं। लेकिन ये प्रयास बूँद-बूँद हैं, और हमें सागर की ज़रूरत है। सरकार को भी सार्वजनिक पुस्तकालयों में निवेश बढ़ाना होगा। एक समय था जब भारत में नालंदा और तक्षशिला जैसे ज्ञान के केंद्र विश्व भर में प्रसिद्ध थे। आज हमें उसी भावना को फिर से जगाने की ज़रूरत है।

किताबें मौन हैं, लेकिन उनकी खामोशी में एक पुकार है। वे हमें बुला रही हैं — न सिर्फ पढ़ने के लिए, बल्कि जीने के लिए, समझने के लिए, और इंसान बने रहने के लिए। अभी देर नहीं हुई है। किसी पुराने पुस्तकालय में चलिए, किसी किताब को छूइए, उसके पन्नों को पलटिए। शायद वह किताब आपका इंतज़ार कर रही हो। शायद वह आपको वह दुनिया दिखाए जो आप भूल चुके हैं। क्योंकि जब किताबें बोलती थीं, तब हम बेहतर थे। और जब हम फिर से किताबों को सुनेंगे, तब हम फिर से बेहतर हो सकते हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

खेल एक, मापदंड दो - क्रिकेट ही अपवाद क्यों?

[जब ओलंपिक में आमना-सामना संभव है, तो क्रिकेट क्यों अपवाद?]

क्रिकेट उपमहाद्वीप में महज एक खेल नहीं, बल्कि एक ज्वलंत युद्ध है—जो दिलों में आग लगाता है, सीमाओं को लांघता है और हर भारतीय के सीने में गर्व की लहर दौड़ाता है। जब भारत और पाकिस्तान के बीच मैदान पर टक्कर होती है, तो हर गेंद एक कहानी रचती है, हर रन एक सपना बुनता है, और हर जीत राष्ट्र के साहस को विश्व पटल पर उकेरती है। यह 22 खिलाड़ियों का संघर्ष नहीं, बल्कि दो देशों की आत्मा, जुनून और अटल संकल्प का संगम है। लेकिन जब भारत इस ऐतिहासिक रणभूमि से पीछे हटता है, तो यह सिर्फ क्रिकेट का नुकसान नहीं, बल्कि उस चिंगारी का बुझना है, जो भारत की अजेयता को विश्व मंच पर और चमकाने का दम रखती है। मैदान छोड़ना यानी बिना लड़े हार मानना—यह भारत की शान के खिलाफ है।

भारत सरकार का आतंकवाद के खिलाफ दृढ़ रुख और राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा हर भारतीय के दिल में गर्व जगाती है। मगर सवाल यह उठता है—जब भारत ओलिंपिक, एशियाई खेलों और सैफ खेलों में पाकिस्तान से भिड़ सकता है, तो क्रिकेट जैसे वैश्विक मंच पर तटस्थ स्थानों पर होने वाले टूर्नामेंटों से परहेज क्यों? यह परहेज क्या भारत की उस शक्ति को कमजोर नहीं करता, जो हर चुनौती को अवसर में बदलने का माद्दा रखती है? क्रिकेट का मैदान वह रणक्षेत्र है, जहाँ खिलाड़ी सिपाहियों की तरह देश का परचम लहराते हैं। जैसे सैनिक सीमा पर दुश्मन का सामना करते हैं, वैसे ही खिलाड़ियों को मैदान पर उतरकर भारत की अजेयता का सबूत देना चाहिए।

भारत-पाकिस्तान के मुकाबले क्रिकेट की दुनिया का ताज हैं। 2023 के विश्व कप में इन दोनों टीमों के बीच हुए मैच को 1 अरब से ज्यादा लोगों ने देखा, जिसने क्रिकेट की वैश्विक अपील को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। भारत का इन मुकाबलों से हटना न केवल करोड़ों प्रशंसकों के जज्बात को ठेस पहुँचाता है, बल्कि उस मंच को भी कमजोर करता है, जहाँ भारत अपनी खेल निपुणता, मानसिक दृढ़ता और कूटनीतिक चातुर्य का परचम लहरा सकता है। जब भारत एशिया कप जैसे टूर्नामेंटों में पाकिस्तान से नहीं भिड़ता, तो यह अनजाने में पाकिस्तान को वैश्विक मंच पर अपनी छवि चमकाने और भारत को कटघरे में खड़ा करने का मौका देता है। यह वॉकओवर देना उसी तरह है, जैसे युद्ध में बिना लड़े मैदान छोड़ देना—यह भारत के गौरव के खिलाफ है।

इतिहास साक्षी है कि भारत ने क्रिकेट के रणक्षेत्र में पाकिस्तान को बार-बार धूल चटाई है। 1992 से 2023 तक विश्व कप में सात शानदार जीतें और 2022 के टी20 विश्व कप में विराट कोहली की ऐतिहासिक पारी ने साबित किया कि भारत न केवल खेलता है, बल्कि जीतता भी है। तटस्थ स्थान पर खेलना भारत के लिए एक सुनहरा अवसर है, यह दिखाने का कि हम हर मोर्चे पर, चाहे वह सीमा हो या स्टेडियम, अजेय हैं। क्रिकेट का मैदान सिर्फ खेल का अखाड़ा नहीं, बल्कि एक कूटनीतिक हथियार है। जब भारत मैदान पर पाकिस्तान को हराता है, तो यह स्कोरबोर्ड की जीत नहीं, बल्कि एक वैश्विक संदेश है—भारत न डरता है, न झुकता है।

पाकिस्तान बार-बार अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत के खिलाफ झूठी कहानियाँ गढ़ता है। वह खुद को खेल भावना का झंडाबरदार बताने की कोशिश करता है, जबकि उसकी नीतियाँ क्षेत्रीय शांति के लिए खतरा बनी हुई हैं। भारत का मैदान से हटना उसे यह मौका देता है कि वह भारत को कमजोर दिखाए और अपनी छवि चमकाए। लेकिन भारत सरकार की दूरदर्शिता और मजबूत रणनीति ने हमेशा ऐसी साजिशों को नाकाम किया है। अब समय है कि हम क्रिकेट के मैदान पर भी यही जवाब दें—खेलें, जीतें और दुनिया को दिखाएँ कि भारत हर चुनौती को स्वीकार करने में सक्षम है।

भारत क्रिकेट के वैश्विक राजस्व का 38% हिस्सा उत्पन्न करता है (2023 के आँकड़ों के अनुसार), और उसकी आवाज एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) में गूंजती है। ऐसे में, टूर्नामेंटों से हटना भारत की इस प्रभावशाली भूमिका को कमजोर करता है। भारत सरकार ने खेल को बढ़ावा देने में कोई कसर नहीं छोड़ी—2023 के क्रिकेट विश्व कप की शानदार मेजबानी हो या 2036 ओलिंपिक की तैयारियाँ, भारत ने साबित किया है कि वह खेल के क्षेत्र में भी महाशक्ति है। तटस्थ स्थान पर पाकिस्तान के खिलाफ क्रिकेट खेलना भारत के लिए एक अवसर है—यह दिखाने का कि हम अपने सिद्धांतों से समझौता किए बिना हर चुनौती का सामना कर सकते हैं।

पाकिस्तान के खिलाफ क्रिकेट मैच सिर्फ एक खेल नहीं, बल्कि एक रणनीतिक मास्टरस्ट्रोक है। यह दर्शाता है कि भारत न केवल सीमाओं पर, बल्कि हर मंच पर—चाहे वह खेल हो, कूटनीति हो या वैश्विक मंच—पाकिस्तान को करारा जवाब देना जानता है। यह युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत और विश्व पटल पर भारत की अजेय शक्ति का प्रतीक होगा। भारत सरकार की दृढ़ नीतियों और सशक्त नेतृत्व ने हमें यह अटूट विश्वास दिलाया है कि हम हर क्षेत्र में विजय हासिल कर सकते हैं। क्रिकेट का मैदान भी इसकी जीवंत मिसाल बनेगा।

यह महज एक क्रिकेट मैच नहीं, बल्कि भारत का शक्तिशाली उद्घोष होगा—हम हर चुनौती को अवसर में बदलने का हुनर जानते हैं। भारत सरकार की दूरदर्शिता और अटल संकल्प ने हमें वह ताकत दी है, जिससे हम न केवल अपनी सीमाओं पर, बल्कि विश्व के हर मंच पर अपनी धमक कायम करते हैं। मैदान पर उतरें, पाकिस्तान को परास्त करें और दुनिया को दिखाएँ कि भारत की जीत स्कोरबोर्ड तक सीमित नहीं, बल्कि हर भारतीय के दिल में गूंजने वाली अमर गाथा है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

'जेंटलमैन गेम' को शर्मसार करतीं 'अनजेंटल' हरकतें

तेंदुलकर–एंडरसन ट्रॉफी : बेन स्टोक्स की हरकत ने 42 साल पहले बंगलौर में पाकिस्तान के कप्तान ज़हीर अब्बास की याद दिला दी.

-हरीश शिवनानी

भारत और इंग्लैंड के बीच खेली जा रही तेंदुलकर-एंडरसन ट्रॉफी के मैनचेस्टर के चौथे टेस्ट मैच के पांचवे दिन के आखिरी घंटे में इंग्लिश कैप्टन बेन स्टॉक्स ने जो हरकत की, वो जेंटलमैन'स गेम कहे जाने वाले क्रिकेट पर एक धब्बे की तरह अंकित हो गई. स्टॉक्स ने जिस परिस्थिति में जो हरकत की, उसने चार दशक पहले भारत और पाकिस्तान के बीच खेले गए मैच की कटु याद दिला दी, जब ऐसी ही परिस्थिति में पाकिस्तान के कप्तान ज़हीर अब्बास ने ठीक वैसी ही हरकत की थी। दरअसल रविवार की रात मैनचेस्टर टेस्ट में जब आख़िरी 15 ओवर का खेल बचा था, स्टोक्स ने जडेजा और सुंदर को मैच ड्रॉ करने का ऑफर दिया, लेकिन दोनों इंडियन बैटर्स ने मना कर दिया. मानते भी कैसे, उस समय जडेजा 89 रन पर और सुंदर 80 रन पर थे. दोनों सेंचुरी डिजर्व करते थे. इस फैसले पर स्टोक्स तिलमिला गए और न सिर्फ इन दोनों पर अपना गुस्सा जाहिर किया, बल्कि विरोध के लिए हैरी ब्रूक की तरफ बॉल उछाल दी. ब्रूक ने भी मजाकिया अंदाज में बॉलिंग की। इससे इंग्लैंड की हताशा साफ जाहिर हो रही थी.उसी दौरान इंग्लैंड के एक और खिलाड़ी की आवाज़ स्टंप्स माइक से आई "आपको कितना समय चाहिए, एक घंटा?"

गुस्साए स्टोक्स ने हताशा में अपने ही दो खिलाड़ियों की इज्जत भी उछाल दी। स्टॉक्स ने कहा, "अगर तुम्हें शतक की बनाना था तो ऐसी बल्लेबाजी पहले कर लेते। क्या तुम ब्रूक जैसे और बेन डाकेट जैसे गेंदबाजों के सामने 100 पूरा करना चाहोगे?" इस पर जडेजा ने कहा, "तुम क्या चाहते हो कि मैं ऐसे ही यहां से चला जाऊं?" इस पर सलामी बल्लेबाज जैक क्रॉली ने कहा, "जडेजा आप हाथ मिलाये और खेल को खत्म कीजिये।" जडेजा ने साफ़ कह दिया, "मैं कुछ नहीं कर सकता।" फिर दोनों टीमों के खिलाड़ियों के बीच कुछ तीखी बहस-सी हुई. इसके बाद स्टोक्स ने हैरी ब्रुक और जो रूट को गेंदबाज़ी पर लगाया और अंतिम कुछ मिनटों में दोनों टीमों के बीच कुछ कड़वाहट दिखी। जडेजा के ड्रॉ से मना करने से स्टोक्स इतने ख़फ़ा हो गए कि मैच के अंत में उन्होंने उन से हाथ भी नहीं मिलाया। इंग्लिश टीम के इस व्यवहार को लेकर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में काफ़ी किरकिरी हो रही है। ऑस्ट्रेलियाई मीडिया ने इंग्ल शि टीम की 'मोरल हिपोक्र सी' बताते हुए स्टोक्स को नौटंकीबाज तक करार कर दिया. फॉक्स क्र किट ने लिखा कि टेस्ट क्रिकेट का तथाकथ ति 'सेवियर' इंग्लैंड अब मनोरंजन से ज़्यादा रिजल्ट्स पर ध्यान केंद्रित करता दिख रहा है. हेराल्ड सन ने अंग्रेजी टीम को 'गैर-खेल भावना' वाला बताया.

मैनचेस्टर में स्टॉक्स के इस नकारात्मक रवैये ने 4२ साल पहले भारत-पाकिस्तान के बंगलौर टेस्ट की कटु याद दिला दी, जब इस टेस्ट में पाकिस्तानी कप्तान ज़हीर अब्बास ने ऐसी ही हरकत की थी. यह घटना 14-18 सितंबर 1983 को चिन्नास्वामी स्टेडियम में हुई थी। यह भारत-पाकिस्तान टेस्ट सीरीज का तीसरा टेस्ट था। यह टेस्ट मैच ड्रॉ की ओर बढ़ रहा था। अंतिम दिन भारत दूसरी पारी में बल्लेबाजी कर रहा था, और सुनील गावस्कर ९६ रन पर थे कि पाकिस्तान के कप्तान जहीर अब्बास ने यह कहते हुए कि दिन के लिए न्यूनतम 77 ओवर पूरे हो चुके हैं, अपनी टीम को मैदान से बाहर ले जाने का फैसला किया। उनका यह फैसला गावस्कर को शतक बनाने से रोकने की रणनीति के रूप में देखा गया, लेकिन सुनील गावस्कर ने मैदान छोड़ने से इनकार कर दिया, क्योंकि नियमों के अनुसार, दिन का खेल आधिकारिक रूप से समाप्त नहीं हुआ था। गावस्कर और उनके साथी बल्लेबाज क्रीज पर डटे रहे। इस घटना के बाद दोनों टीमों के अधिकारियों और अंपायरों के बीच चर्चा हुई। लगभग २५ मिनट बाद, अंपायरों ने पाकिस्तान को साफ कह दिया कि या तो वो वापस खेलने के लिए मैदान में आए, नहीं वे अंतरराष्ट्रीय नियमों के अनुसार भारत को विजेता घोषित कर देंगे। अंपायर की इस चेतावनी के बाद खिसियाते हुए पाकिस्तान टीम को वापस मैदान पर आना पड़ा। खेल दोबारा शुरू होने पर गावस्कर ने अपना २8 वां टेस्ट शतक पूरा किया। यह घटना क्रिकेट इतिहास में एक विवादास्पद घटना भी के रूप में दर्ज है। इसी तरह 13 मार्च 1996 को कोलकाता के ईडन गार्डन्स में भारत और श्रीलंका के बीच विल्स वर्ल्ड कप 1996 का सेमीफाइनल भी क्रिकेट इतिहास की शर्मनाक घटनाओं में से एक है। हालांकि इसमें खिलाड़ियों की नहीं, दर्शकों की नकारात्मक भूमिका थी. मैच में भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी चुनी। श्रीलंका ने 50 ओवर में २51 रन बनाए। भारत ने २5२ रनों के लक्ष्य का पीछा शुरू किया, जिसमें सचिन तेंदुलकर और संजय मांजरेकर ने स्कोर 98/1 तक पहुंचाया; लेकिन तेंदुलकर के आउट होने के बाद भारतीय पारी ढह गई और 34.1 ओवर में स्कोर 1२0/8 हो गया। भारत की हार स्पष्ट होने पर निराश, हताश, गुस्साए दर्शकों ने मैदान पर बोतलें फेंकनी शुरू कीं और स्टैंड में आग लगा दी। लगभग एक लाख दर्शकों की भीड़ हंगामे पर उतर आई। जिससे परेशान होकर मैच रेफरी क्लाइव लॉयड और अंपायरों (सिरिल मिचली, स्टीव डन) को खेल रोकना पड़ा। २5-30 मिनट बाद खेल दोबारा शुरू करने की कोशिश हुई, लेकिन हंगामा जारी रहा। आख़िरकार रैफरी लॉयड ने स्थिति को असुरक्षित मानकर रद्द कर दिया और श्रीलंका को डिफॉल्ट से विजेता घोषित कर दिया। श्रीलंका ने बाद में फाइनल में ऑस्ट्रेलिया को हराकर वर्ल्ड कप जीता। यह घटना क्रिकेट की खेल भावना के खिलाफ एक काला धब्बा बन गई। दर्शकों द्वारा बोतलें फेंकना, आग लगाना, और खेल को बाधित करना क्रिकेट की "जेंटलमैन गेम" की भावना के ख़िलाफ़ था।

"ट्रांसफर फाइलें धूल फांक रही हैं: सरकार की मंशा सवालों के घेरे में"

(शिक्षक इंतज़ार में, सरकार इनकार में : क्या ट्रांसफर सिर्फ चुनावी औजार है?₹, ₹शिक्षक ट्रांसफर नीति : मंशा है या महज दिखावा?, नीति, नीयत और नजरअंदाजी : हरियाणा में शिक्षक बनाम सिस्टम)

हरियाणा में शिक्षक ट्रांसफर नीति वर्षों से ठंडे बस्ते में पड़ी है, जबकि सरकार ने CET परीक्षा मात्र एक महीने में आयोजित करवा दी — फॉर्म से लेकर परिणाम तक। यह विरोधाभास दर्शाता है कि सरकार की प्राथमिकता में शिक्षक नहीं, राजनीति है। हर बार कैबिनेट मीटिंग और पोर्टल अपडेट का बहाना बनाकर ट्रांसफर को टाल दिया जाता है। शिक्षकों की पारिवारिक, मानसिक और स्वास्थ्य से जुड़ी ज़रूरतें सरकार की नीयत की बलि चढ़ रही हैं। अब समय है कि सरकार पारदर्शी नीति लागू करे, वरना मौन असंतोष जल्द आंदोलन में बदल सकता है।

डॉ. सत्यवान सौरभ

हरियाणा में शिक्षकों की स्थानांतरण नीति (Transfer Policy) को लेकर जारी असमंजस अब एक मज़ाक बन चुका है। पिछले कई महीनों से शिक्षक इंतजार कर रहे हैं कि कब ट्रांसफर पोर्टल खुलेगा, कब कैबिनेट मीटिंग में निर्णय होगा, और कब उनकी वर्षों से अटकी उम्मीदें परवान चढ़ेंगी। लेकिन अफसोस, यह सब बातें अब केवल सरकार की ₹राजनीतिक प्राथमिकताओं₹ पर निर्भर हैं। और जब हम सरकार की प्राथमिकताएं देखते हैं, तो साफ हो जाता है कि शिक्षकों की ट्रांसफर नीति उनके एजेंडे में सबसे नीचे है।

दूसरी ओर, सरकार ने जिस फुर्ती से CET (कॉमन एलिजिबिलिटी टेस्ट) आयोजित किया है, वह एक बेमिसाल मिसाल बन गया है — एक महीने में फॉर्म, परीक्षा और अब परिणाम तक! अगर यही इच्छाशक्ति ट्रांसफर नीति को लेकर होती, तो आज सैकड़ों शिक्षक अपने परिवार के पास, बीमार माता-पिता के साथ या छोटे बच्चों की देखभाल में लगे होते।

CET में स्पीड, ट्रांसफर में सस्पेंस

CET परीक्षा की बात करें तो सरकार ने: फॉर्म आमंत्रित किए,

परीक्षा केंद्र तय किए, लाखों उम्मीदवारों की परीक्षा करवाई,

और अब परिणाम भी घोषित होने वाला है — यह सब 30-35 दिनों के भीतर। यह एक प्रशासनिक मशीनरी का अद्भुत उदाहरण हो सकता था — अगर यही तेजी और पारदर्शिता शिक्षक ट्रांसफर नीति में भी दिखती। लेकिन वहां हर बार कैबिनेट मीटिंग की प्रतीक्षा, पोर्टल अपडेशन का बहाना, नीति समीक्षा का हवाला और न जाने क्या-क्या बहाने बनते रहे।

कैबिनेट मीटिंग: निर्णय का बहाना या जनता को भरमाने का तरीका?

हर बार यही कहा जाता है कि "अगली कैबिनेट मीटिंग में फैसला होगा।" लेकिन वह अगली मीटिंग कभी ₹अंतिम₹ नहीं बनती। शिक्षकों की निगाहें हर बुधवार की बैठक पर टिकी रहती हैं, लेकिन हर बार निराशा हाथ लगती है। क्या ये कैबिनेट मीटिंग्स केवल टालमटोल का राजनीतिक नाटक बनकर रह गई हैं? या फिर वास्तव में सरकार शिक्षकों की पीड़ा को ही नहीं समझना चाहती?

ट्रांसफर नीति: सिर्फ कागज़ों में न्याय, ज़मीन पर अन्याय

सरकार हर साल MIS पोर्टल खुलवाकर शिक्षकों से दस्तावेज अपडेट करवाती है। शिक्षक निष्ठा से सब अपडेट करते हैं, लेकिन जब उनकी ज़रूरत होती है — ट्रांसफर की प्रक्रिया — तो यही पोर्टल

₹तकनीकी खराबी₹ की शरण में चला जाता है।

कई शिक्षक ऐसे हैं जो 10-12 सालों से एक ही स्कूल में फंसे हुए हैं। जिनकी पारिवारिक, मानसिक, और शारीरिक स्थिति इस स्थानांतरण पर निर्भर करती है। लेकिन सरकार उन्हें ₹पॉलिसी वेटिंग₹ और ₹कमेटी समीक्षा₹ जैसे शब्दों से बहला रही है।

नीति बनाम नीयत: यही है असली अंतर

सरकार की नीयत अगर पारदर्शिता और शिक्षक कल्याण की होती, तो अब तक ट्रांसफर नीति लागू हो चुकी होती।

CET के 15 लाख बच्चों के लिए महीनों का काम हफ्तों में हो सकता है, तो कुछ हज़ार शिक्षकों के ट्रांसफर क्यों नहीं?

यह फर्क केवल प्रशासनिक नहीं है, यह मानसिकता का फर्क है। सरकार को लगता है कि शिक्षक "साइलेंट वर्कर्स" हैं, वे प्रदर्शन नहीं करेंगे, सड़कों पर नहीं उतरेंगे, और न ही कोई राजनीतिक नुकसान होगा। यही सोच उन्हें उपेक्षित करती है।

शिक्षकों की ज़िंदगी सरकारी आलस्य की बंधक

कोई शिक्षक अपने बुजुर्ग माता-पिता की सेवा के लिए ट्रांसफर चाहता है। कोई अपने छोटे बच्चों के पालन-पोषण हेतु, कोई विवाहित शिक्षक/शिक्षिका अपने जीवनसाथी के पास स्थायी पोस्टिंग की प्रतीक्षा में है। कुछ शिक्षकों की अपनी बीमारी के चलते भी ट्रांसफर की जरूरत है। पर इन मानवीय पहलुओं को ट्रांसफर नीति में "डेटा", "रैंक", "दूरी", और "ऑनलाइन प्रक्रिया" के तकनीकी शब्दों में घुमा दिया जाता है।

चुनावी लाभ बनाम संवेदनशील प्रशासन

सरकार को जहां वोट दिखते हैं, वहां काम होता है। CET एक बड़ा राजनीतिक दांव है — सरकार युवाओं को यह दिखाना चाहती है कि वह नौकरियों को लेकर संवेदनशील है। भले ही उसमें चयन दर केवल 1-2% हो। लेकिन असल में, ये परीक्षा भी एक भ्रम है — चपरासी के लिए PhD धारक खड़े हैं।

वहीं शिक्षक, जिनसे सरकार की शिक्षा प्रणाली चल रही है, जिनके कंधों पर बच्चों का भविष्य है — उन्हें पॉलिसी की भूलभुलैया में भटका दिया गया है।

मौन आंदोलन की आग सुलग रही है

सरकारी स्कूलों में कार्यरत हजारों शिक्षक अब सोशल मीडिया, व्हाट्सएप ग्रुप्स और चुपचाप प्रशासनिक माध्यमों से अपनी बात रख रहे हैं। लेकिन यह चुप्पी बहुत देर तक नहीं रहेगी।

यदि सरकार ने यह रवैया जारी रखा, तो जल्द ही यह असंतोष एक आंदोलन का रूप ले सकता है। और तब सरकार को समझ आएगा कि ₹शिक्षक केवल पाठशाला नहीं चलाते, जनमत भी बना सकते हैं।"

क्या ट्रांसफर एक राजनीतिक टूल बन चुका है?

हरियाणा सरकार को यह स्पष्ट करना होगा कि शिक्षक ट्रांसफर नीति वास्तव में नीति है या एक राजनीतिक औजार, जिसे चुनावों या दबावों के अनुसार खोला और बंद किया जाता है। सरकार को यह नहीं भूलना चाहिए कि >शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ शिक्षक हैं, और रीढ़ को नजरअंदाज कर कोई भी सत्ता लंबे समय तक खड़ी नहीं रह सकती।

अब सरकार के पास दो ही रास्ते हैं:

1. पारदर्शिता और संवेदनशीलता से ट्रांसफर नीति लागू करे

2. या फिर इस उपेक्षा की राजनीति का सामना करे चुनावी असंतोष के रूप में।

मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने गढ़वा में किया पी एम श्री केंद्रीय विधालय का उद्घाटन

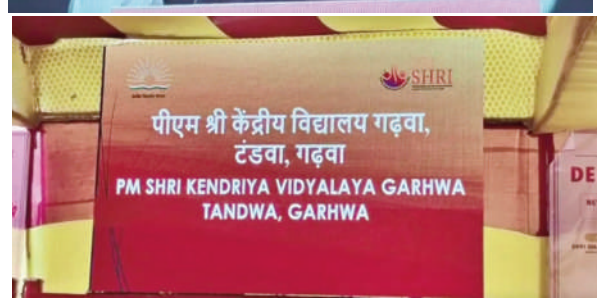

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

सरायकेला। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने मंगलवार को गढ़वा जिला मुख्यालय में लगभग 10 करोड़ रुपयों की लागत से बनकर तैयार पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय भवन का ऑनलाइन उद्घाटन किया. इस अवसर पर जिले के डीसी, केंद्रीय विद्यालय के कई अधिकारीगण, शिक्षक एवं बच्चे मौजूद थे.

इस विद्यालय छोटी सी जगह में बना था एक भवन में चलाया जाता था, जहां बच्चों को काफी असुविधाओं के बीच पढ़ाई करनी पड़ती थी. बच्चों की समूचित ढंग से पढ़ाई नहीं हो पाती थी. मूलभूत सुविधाओं का भी घोर अभाव था. लेकिन इस विद्यालय के मिलने से बच्चों से लेकर शिक्षक तक सभी में काफी खुशी देखने को मिल रही है.

कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय मंत्री ने विद्यालय के भवन की खूब प्रशंसा भी की. उन्होंने भवन के जल्द बनने पर खुशी जाहिर करते हुए इसे उच्च क्वालिटी के शिक्षा के लिए उपयोगी बताया।

महिला दुर्व्यवहार के मामलों में ओडिशा पहले स्थान पर, जिसने दुनिया को चौंका दिया: बीजद

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: पूरे राज्य में महिलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं, छात्राओं के साथ बलात्कार हो रहे हैं, छात्राएँ गर्भवती हो रही हैं। बलंगा और एफएम की घटनाओं को लेकर बीजद ने विरोध प्रदर्शन का आह्वान किया था। यह आंदोलन और आगे बढ़ेगा। हर दिन 15 बलात्कार हो रहे हैं। भाजपा सरकार में ऐसे 18 हज़ार मामले सामने आए हैं। निकम्मी सरकार। एफएम घटना में एक समिति का गठन किया जा रहा है ।कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। छात्रा की एफआईआर क्यों नहीं दर्ज की गई, इस दिशा में कोई नहीं जा रहा है। अमेरिका ने कहा कि ओडिशा सुरक्षित नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने बलंगा की घटना की निंदा की है। एक छात्रा स्कूल में गर्भवती हो रही है। महिला दुराचार के मामलों में ओडिशा नंबर एक है। जिसने दुनिया को हिलाकर रख दिया है। इसके खिलाफ युवा और छात्र बीजद सरकार को माफ नहीं करेंगे। अगर इसे नहीं रोका गया तो 1 अगस्त से 8 अगस्त तक सभी कॉलेज परिसर बंद रहेंगे और एसपी को डीजी को ज्ञापन दिया जाएगा। मुख्यमंत्री चैन की नींद सो रहे हैं। 4 अगस्त से 14 अगस्त तक मुख्यमंत्री को पत्र लिखा जाएगा। उन्हें हस्तक्षेप करना चाहिए। समुद्र तट और परिसर असुरक्षित हैं। अगर न्याय नहीं मिला तो वह इस्तीफा दे देंगे, बीजद विधायक ब्योमकेश रॉय ने कहा।

जिस तरह से ओडिशा में तमाम दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं हो रही हैं, आज छात्र परिसर से भाग रहे हैं। पुलिस कार्रवाई नहीं करेगी। बलंगा की घटना में पुलिस निष्क्रिय है। छात्र अपनी सुरक्षा की मांग करेंगे। मुख्यमंत्री स्वयं गृह विभाग के प्रभारी हैं। ठोस कार्रवाई की मांग की जाएगी। पोस्टकार्ड भेजे जाएँगे। ओडिशा में कभी महिलाएँ सशक्त थीं, लेकिन अब अमेरिकी यात्रा गाइड का कहना है कि ओडिशा सुरक्षित नहीं है। छात्र समुदाय का सरकार से विश्वास उठ गया है। बीजद 1 अगस्त से दूसरे चरण का और 9 अगस्त से तीसरे चरण का आंदोलन करेगा ताकि वे परिसरों और सड़कों पर सुरक्षित महसूस करें।

अगर भाजपा सरकार कार्रवाई नहीं करती है, तो राज्य में एक बड़ा छात्र आंदोलन होगा। उपसभापति का कल ओडिशा की कानून-व्यवस्था की स्थिति पर विश्वास उठ गया। इसलिए, उन्होंने मुख्यमंत्री से दूसरे राज्य का मॉडल अपनाने का अनुरोध किया। ओडिशा में इससे ज़्यादा निंदनीय घटना पहले कभी नहीं हुई। बीजद विधायक देवी रंजन त्रिपाठी ने कहा, उपसभापति को एहसास हो गया है कि यहाँ कानून-व्यवस्था नहीं है।

जीवन वास्तव में एक अनुपम और अनमोल उपहार है

— डॉ. मुश्ताक अहमद शाह, सहज, सरदा (मध्य प्रदेश)

जीवन वास्तव में एक अनुपम और अनमोल उपहार है ।एक ऐसी यात्रा, जिसमें हर मोड़ नया अनुभव, सीख और संभावनाओं की झलक लिए होता है। कई बार परिस्थितियाँ कठिन होती हैं, राहें धुंधली प्रतीत होती हैं, लेकिन सच्ची उपलब्धि इसी में है कि हम इन पलों में भी जीवन की सुंदरता को देखना सीखें और सीखते रहें।

जीवन के अनुभव,हमारे सच्चे मार्गदर्शक

हर व्यक्ति के जीवन में उतार-चढ़ाव आते हैं। कभी खुशी, तो कभी दुख—ये दोनों ही अनुभव हमें भीतर से मजबूत बनाते हैं। कठिनाइयों से डरना नहीं चाहिए; बल्कि इनसे मिलने वाली सीख को अपने जीवन में सहेजना चाहिए। जब भी जीवन में संकट या चुनौती सामने आए, याद रखें कि यही अनुभव हमारे व्यक्तित्व को नई परिभाषा देते हैं।

वास्तविक बुद्धिमत्ता तो इसी में है कि हम सिर्फ कठिन समय में ही नहीं, बल्कि अच्छे समय में भी अपने अनुभवों की समीक्षा करें और उनसे मिले सबक को हमेशा याद रखें। इससे हम आत्ममंथन कर पाते हैं और आने वाले कल के लिए खुद को आगे ले जाते हैं।

जीवन को अर्थपूर्ण बनाना,हमारे हाथ में

जीवन का सौंदर्य इसी में है कि हम हर क्षण को पूरी तन्मयता से जिएँ। छोटी-छोटी खुशियों का आनंद लें, अपनों की खुशी में खुश हों, और दूसरों के लिए भी सहारा बनें। जब हम दूसरों की खुशियों का कारण बनते हैं, तब जीवन वास्तव में महकने लगता है। अपने लक्ष्यों के प्रति समर्पित रहना, निरंतर सीखते रहना और आत्मविश्वास बनाए रखना—यही सफलता की कुंजी है। याद रखें, हमें हर परिस्थिति में उम्मीद और सकारात्मकता बनाए रखनी चाहिए; क्योंकि अच्छा समय और सफलता उन्हीं के हिस्से में आती है, जो चुनौतियों से हार न मानें। जीवन की असली सुंदरता उसकी विविधता, अनुभव और उससे मिलने वाली सीख में छुपी है। जो व्यक्ति इन बातों को समझ लेता है, उसके लिए जीवन सिर्फ एक यात्रा नहीं, बल्कि एक प्रेरणा बन जाती है। इसलिए, जीवन से प्रेम करें, सीखते रहें, बढ़ते रहें,यही जीवन को सुंदर और अर्थपूर्ण बनाता है। "जो जीवन को समझ गया, वही जीवन को जी पाया।"

अमेरिका झारखंड में निवेश व सहयोग हेतु इच्छुकः कैली जाइल डियाज, यु एस काउंसलेट जेनरल

मुख्य सचिव अलका तिवारी के साथ हुई बैठक

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची: झारखंड के विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग और निवेश को लेकर मंगलवार को मुख्य सचिव , झारखंड अलका तिवारी के साथ अमेरिकी काउंसलेट जेनरल की विस्तृत चर्चा हुई। इस दौरान खनन, पर्यटन, कृषि, ऊच्च शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संतुलन, श्रम शक्ति इत्यादि क्षेत्रों में सहयोग और निवेश की संभावनाएं तलाशी गईं।

मुख्य सचिव अलका तिवारी ने कहा कि झारखंड के कई क्षेत्रों में निवेश और सहयोग की अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने राज्य की प्राकृतिक संसाधनों को विस्तार से बताया। साथ ही यहां की श्रम शक्ति को हुनरमंद बनाकर कैसे योजनाओं के माध्यम से वृहद आर्थिक गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है, उस पर प्रकाश डाला। महिला सुरक्षा और सशक्तिकरण में आये बड़े बदलाव को रेखांकित किया। उन्होंने विस्तार से बताया कि कैसे मुख्यमंत्री की पहल से मईयां सम्मान योजना से महिलाओं का आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण से लेकर श्रम का पलायन रोक कर झारखंड की आर्थिक-सामाजिक परिदृश्य को बदला जा रहा है। उन्होंने ऊच्च शिक्षा के क्षेत्र में अमेरिकी विश्वविद्यालयों के साथ संभावनाओं पर भी चर्चा की। अमेरिकी काउंसलेट जेनरल कैली जाइल डियाज ने चर्चा के दौरान चिह्नित क्षेत्रों में आगे बढ़ने की प्रक्रिया शुरू करने पर बल दिया।

खान निदेशक राहुल कुमार सिन्हा ने अमेरिकी काउंसलेट जेनरल को बताया कि खनन के क्षेत्र में कोयला समेत विभिन्न खनिजों के खनन, खनन उपकरण कारखाना स्थापना में ज्वायंट वेंचर की अपार संभावनाएं हैं। वहीं लिथियम, ग्रेफाइट और टेटानियम के प्रसंस्करण में भी आपसी सहयोग से आगे बढ़ा जा सकता है। टास्क फोर्स-सस्टनेबल जस्ट ट्रांजिशन के चेयरमैन एके रस्तोगी ने पर्यावरण संरक्षण में सहयोग पर विस्तार से प्रकाश डाला। बताया कि झारखंड पूरे भारत में सर्वाधिक 33 प्रतिशत वन क्षेत्र वाला राज्य है। उन्होंने कहा कि कार्बन क्रेडिट के क्षेत्र में आपसी सहयोग की बड़ी संभावना है। इसके अतिरिक्त झारखंड के पर्यटन स्थलों का उल्लेख करते हुए बताया कि इस क्षेत्र में भी निवेश और सहयोग की प्रचुर संभावना है। राज्य में लगभग 70 प्रतिशत लोग कृषि कार्य से जुड़े हैं, यह क्षेत्र भी सहयोग और निवेश के लिए आकर्षक क्षेत्र है।

अमेरिकी काउंसलेट जेनरल के साथ बैठक के दौरान मुख्य सचिव के अतिरिक्त टास्क फोर्स-सस्टनेबल जस्ट ट्रांजिशन के चेयरमैन एके रस्तोगी और अमेरिकी काउंसलेट जेनरल की सहयोगी संगीता डे चंदा उपस्थित थे।

बिहार से आ रही बस बैधनाथ धाम में ट्रक से टकराई छह कांवड़ मृत, तीस जख्मी, सांसद निशिकांत दुबे का दावा अठारह भक्तों की हुई है मौत

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। झारखंड के बाबा वैद्यनाथ की जमीं देवघर में मंगलवार सुबह बड़ा हादसा हो गया। बस और गैस सिलैंडर लदा ट्रक की भीषण टक्कर में कम से कम 6 कांवड़ियों की मौत हो गई है तो 30 से ज्यादा जख्मी हैं। जहां, भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने 18 श्रद्धालुओं के मारे जाने का दावा किया है, वहीं स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी ने प्रत्येक मृतक को 1-1 लाख रूपये देने का दावा किया है तथा घायलों को 20 हजार प्रदान किया जायेगा ।देवघर–हंसडीहा मुख्य पथ पर मोहनपुर थाना क्षेत्र के जमुनिया चौक के समीप श्रद्धालुओं से भरी बस और गैस सिलेंडर लोड ट्रक के बीच भीषण टक्कर में 5 श्रद्धालु सहित बस चालक की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, हादसे में 30 श्रद्धालु घायल भी हो गए हैं। मृतकों में बिहार के अलग–अलग चार जिलों की महिलाएं और एक किशोर के अलावा मोहनपुर थाना क्षेत्र निवासी बस चालक शामिल है ।घायलों को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। प्राथमिक उपचार के बाद सबों को बेहतर इलाज के लिए देवघर एम्स रेफर कर दिया गया है। हादसे में घायल श्रद्धालुओं के अनुसार सभी श्रावणी मेले की तीसरी सोमवारी पर देवघर में बाबा वैद्यनाथ पर जलार्पण करने के बाद मंगलवार अहले सुबह यात्री बस से बासुकीनाथ जा रहे थे। उसी दौरान रास्ते में अनियंत्रित ट्रक और बस में जोरदार टक्कर हो गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बस के परखच्चे उड़ गए।

हादसे में अब तक 6 कांवड़ियों की मौत हो चुकी है तो 30 से ज्यादा जख्मी हैं। घायलों को सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सभी मृतक और जख्मी कांवड़िये बिहार के बेतिया और गया निवासी बताए जा रहे हैं।

झारखंड के प्रसिद्ध बाबा बैद्यनाथ धाम में इन दिनों श्रावणी मेले की वजह से हर दिन लाखों श्रद्धालु आ रहे हैं। झारखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश समेत देश-विदेश से श्रद्धालु सावन में बाबा की पूजा के लिए आते हैं। देवघर आने वाले अधिकतर श्रद्धालु बासुकीनाथ भी जाते हैं। इस वजह से रास्ते पर काफी भीड़-भाड़ होती है ।यह घटना भोर चार पांच बजे घटित हुई है ।

1. दुर्गावती देवी, 45 वर्ष, मतराजी, लकरिया, पश्चिमी चंपारण, बिहार ।2. संता देवी, पटना, बिहार ।3. सुमन कुमारी, गया, बिहार ।4. जानकी देवी, बेतिया, बिहार ।5. पीयूष कुमार, 15 वर्ष, नया गांवगंज, वैशाली, बिहार ।6. सुभाष तूरी, (बस चालक) 30 वर्ष, चकरमा, मोहनपुर, देवघर।

भुवनेश्वर हवाई अड्डे पर 30 करोड़ रुपये का मारिजुआना बरामद, 3 गिरफ्तार

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: भुवनेश्वर हवाई अड्डे पर 30 करोड़ रुपये का गांजा बरामद हुआ। यात्री बैंकॉक से भुवनेश्वर आ रहा था, तभी कस्टम विभाग ने उसे पकड़ लिया। इस मामले में तीन लोगों को हिरासत में लिया गया है और उनसे पूछताछ की जा रही है। गिरफ्तार किए गए तीनों आरोपियों के नाम मोहम्मद जाम, मोहित और बामती हैं। ये सभी उत्तर प्रदेश के फतेहपुर सीकरी इलाके के रहने वाले बताए जा रहे हैं ।वह इंडिगो की उड़ान संख्या 6-ई-1066 से यात्रा कर रहे थे ।भुवनेश्वर हवाई अड्डे से 30 करोड़ रुपये मूल्य का गांजा ज़ब्त किया गया। यात्री बैंकॉक से भुवनेश्वर आ रहा था, तभी सीमा शुल्क विभाग ने उसे रोक लिया। इस मामले में तीन लोगों को हिरासत में लिया गया है और उनसे पूछताछ की जा रही है। गिरफ्तार किए गए तीनों आरोपी मोहम्मद जाम, मोहित और बामती हैं। ये सभी उत्तर प्रदेश के फतेहपुर सीकरी इलाके के रहने वाले बताए जा रहे हैं।

गांजे का बाजार मूल्य एक करोड़ रुपये प्रति किलोग्राम है, लेकिन हाइड्रोपोनिक्स से भरे तीन बैग मिले हैं। हालाँकि, चूँकि 30 किलोग्राम गांजा मिला है, इसलिए सीमा शुल्क विभाग का अनुमान है कि इसकी कीमत 30 करोड़ रुपये से ज़्यादा होगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023